सुरभि

तृतीय अंक 2025-26











सत्यमेव जयते

भारत सरकार

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय

पशुपालन और डेयरी विभाग

राजभाषा अनुभाग

राजभाषा पत्रिका

सुरभि

तृतीय अंक 2025

इस पत्रिका के माध्यम से विभाग में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने का एक प्रयास मात्र है। इसमें व्यक्त विचार संबंधित रचनाकारों के अपने विचार हैं जिसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आलोक में देखा जाए। इसके लिए विभाग या भारत सरकार उत्तरदायी नहीं है।

'सुरभि' के अगले अंक के लिए पशुपालन और डेयरी विभाग के कार्मिकों की रचनाएं आमंत्रित हैं। रचनाएं भेजते समय अपना नाम, पदनाम, फोटो, कार्यालय का पूरा पता और टेलीफोन नं. भी साथ में दें।

पता : कमरा संख्या - 557, 'एच' विंग, पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001

दूरभाष : 011-23070319

ई-मेल : swati.melti@dahd.nic.in

नोट : सुरभि के तृतीय अंक के बारे में आप अपने बहुमूल्य सुझाव डाक या ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।

मुख व पश्च पृष्ठ परिकल्पना : श्री अमित शंकर और डॉ. राघवेंद्र नाथ त्रिपाठी

राजभाषा पत्रिका

सुरभि

तृतीय अंक 2025

प्रधान संरक्षक

के. गुरुमूर्ति

संयुक्त सचिव (राजभाषा)

प्रधान संपादक

स्वाति मेल्टी

उप निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

मनीष कुमार मीणा

निजी सहायक

सहायक संपादक

उमा मिश्रा

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वर्तिका राय

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

डॉ. राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अमित शंकर

परामर्शदाता

राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह
RAJIV RANJAN SINGH ALIAS LALAN SINGH

सत्यमेव जयते

पंचायती राज मंत्री
और मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री
भारत सरकार
Minister of Panchayati Raj and
Minister of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying
Government of India

DO. No.24091 MIN PR&FAHD/20.25

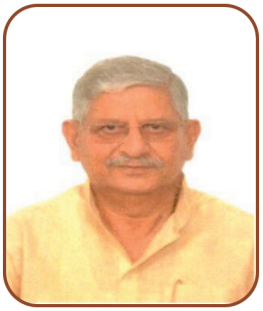

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा वार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ विभिन्न राज्यों में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। ये सभी हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर हैं, जिन्हें संजोकर रखना हम सबका कर्तव्य है। आज हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषाओं में अग्रणी स्थान रखती है, जो इसकी व्यापक स्वीकार्यता और महत्ता का प्रमाण है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम और सम्मान, वस्तुतः राष्ट्रप्रेम का ही प्रतीक है। हिंदी में किया गया मौलिक लेखन सहज, स्वाभाविक और जनभावनाओं से ओत-प्रोत होता है।

हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोते हुए 'अनेकता में एकता' की भावना को सशक्त बनाया है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात् यह सुनिश्चित किया गया कि केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में संपादित किए जाएँ।

आइए, इस अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि अधिक से अधिक मूल कार्य सरल, सुबोध और प्रभावी हिंदी में संपादित कर अपने संवैधानिक दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करेंगे।

(राजीव रंजन सिंह)

प्रो. एस.पी. सिंह बघेल
राज्य मंत्री
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी
एवं
पंचायती राज मंत्रालय
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

पंचायती राज

Prof. S.P. SINGH BAGHEL
Minister of State for
Fisheries, Animal Husbandry & Dairying
and
Panchayati Raj
Government of India



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि *राजभाषा अनुभाग* द्वारा प्रकाशित *'सुरभि'* पत्रिका अपने उद्देश्य के अनुरूप मंत्रालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार और संवर्धन में सेतु का कार्य कर रही है। यह पत्रिका न केवल भाषाई अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह मंत्रालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक अभिरुचि और विचारों को साझा करने का एक सशक्त मंच भी प्रदान करती है।

हिंदी हमारे मन, मस्तिष्क और संस्कारों की भाषा है। यह केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्र की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक है। अतः आवश्यक है कि हम अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। मंत्रालय में विभिन्न योजनाओं और अभियानों से संबंधित जानकारी हिंदी के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचे — यह भी इस पत्रिका का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य और योगदान है।

मुझे विश्वास है कि *'सुरभि'* का यह अंक भी पाठकों में भाषा के प्रति प्रेम, सृजनशीलता और राष्ट्रीय गर्व की भावना को और सशक्त करेगा।

मैं *'सुरभि'* पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन के लिए राजभाषा अनुभाग को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(प्रो. एस.पी. सिंह बघेल)

नरेश पाल गंगवार, भा.प्र.से.
NARESH PAL GANGWAR, IAS
सचिव
SECRETARY

भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
पशुपालन एवं डेयरी विभाग
Government of India
Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying
Department of Animal Husbandry & Dairying
218, A-Wing, Krishi Bhawan
New Delhi-110001

28 अक्टूबर 2025



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा राजभाषा पत्रिका 'सुरभि' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी को हमारे देश के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। यह हमारे देश की अखंडता एवं एकता का प्रतीक है। आज हिंदी भाषा का स्थान विश्व की प्रमुख भाषाओं में है। वैश्वीकरण के दौर में हिंदी का महत्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रसार हेतु राजभाषा अनुभाग निरंतर प्रयासरत है। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इससे हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है। हमारा लक्ष्य राजभाषा के क्षेत्र में प्रगति के सभी सोपान पार करते हुए प्रत्येक क्षेत्र में राजभाषा हिंदी की पहुंच को बढ़ाना है।

आज समय की मांग है कि राजभाषा हिंदी ज्ञान-विज्ञान की भाषा बने तथा अधिक से अधिक वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य राजभाषा हिंदी में सृजित हो। मेरा मानना है कि राजभाषा पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करना तथा केंद्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से इस विभाग के सभी कार्मिकों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

पत्रिका के नए अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेश पाल गंगवार)

के. गुरुमूर्ति
K. GURUMURTHY
संयुक्त सचिव
JOINT SECRETARY
(Est/Admin/Parl./PC/Legal/RTI/OL)

भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
पशुपालन एवं डेयरी विभाग
Government of India
Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying
Department of Animal Husbandry & Dairying
218, A-Wing, Krishi Bhawan
New Delhi-110001



संदेश

'सुरभि' पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्मिकों को हिंदी में मूल रूप से लिखने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ उन्हें अपनी सृजन क्षमता प्रदर्शित करने का एक अवसर भी प्रदान करती है। इससे राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का मार्ग स्वयमेव प्रशस्त होता है। 'सुरभि' समूचे भारत में फैले हमारे कार्यालयों के कार्मिकों के बहुमूल्य ज्ञान का एक समृद्ध संग्रह बनी है। इससे एक ओर जहां पाठकों को उपयोगी, ज्ञानवर्धक तथा रोचक जानकारी प्राप्त होती है, वहीं दूसरी ओर यह विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच भी बनती है।

विभाग में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए जरूरी है कि अपना अधिक से अधिक कार्य मूल रूप से हिंदी में किया जाए। इस दृष्टि से हमारी यह गृह पत्रिका कार्मिकों में हिंदी लेखन की प्रतिभा विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई है। मैं अपने समस्त कार्मिकों से कहना चाहता हूँ कि वे आगामी अंकों में 'सुरभि' के साथ एक रचनाकार के रूप में जुड़ने का प्रयास करें। ऐसा करके हम हिंदी को इसका सही स्थान दिला पाएंगे। पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

के. गुरुमूर्ति

(के. गुरुमूर्ति)

संपादक की कलम से.....



भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में पत्र-पत्रिकाओं की बड़ी भूमिका होती है और इसके साथ ही महत्वपूर्ण होती है उनकी निरंतरता। भाषा साहित्य, लेखों, आलेखों, निबंधों, कविताओं के प्रवाह को बनाए रखना जितना आवश्यक होता है उतना ही कठिन भी। परंतु आज विभाग की राजभाषा पत्रिका 'सुरभि के तीसरे अंक को आपको सौंपते हुए मुझे अपार सुख की अनुभूति हो रही है।

यह एक ओर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति को प्रदर्शित करता है और दूसरी ओर आपके साथ और सहयोग की ताकत को दर्शाता है।

आज जब हिंदी विदेशों में भी प्रतिष्ठा पा रही है तो क्या कारण है कि हम अपने देश में इसे अपनाने बढ़ाने में झिझक रहे हैं। हमें स्वयं ही धीरे-धीरे इस ज़ंजीरों को तोड़ना होगा और अपनी मातृभाषाओं और अपनी राजभाषा को उचित सम्मान देना होगा। आज कम्प्यूटर युग अपने शैशव काल से निकल कर युवावस्था में आ चुका है और एआई के प्रयोग के साथ कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करना सरल हुआ है। अब हम सबको अपने दैनिक कार्यों में मूल रुप से हिंदी में काम करके राजभाषा को सशक्त बनाना है।

हिंदी हमारी अपनी भाषा है, हमारे हृदय की भाषा है। हम सब हिंदी प्रेमियों का कर्तव्य होना चाहिए कि हम हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सम्मिलित प्रयास करें। इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला के रूप में यह पत्रिका आज आपके हाथों में है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी का प्यार व अनुराग हमें आपकी रचनाओं के रुप में मिलता रहेगा। सुधी पाठकजनों की प्रतिक्रियाओं और सुझावों का इंतजार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

स्वाति मेल्टी
उप निदेशक (रा.भा.)

वर्ष 2025

सुरभि के इस अंक में...

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
	❖ लेख		
1.	सतत् पशुपालन और डेयरी कृषि	वर्तिका राय	1
2.	पशुओं के लिए चारे का महत्व	डॉ. सुदेशना दास	7
3.	पर्यावरण: जीवन का आधार	राकेश कुमार	11
4.	वनाग्नि: एक संकट	श्वेत प्रकाश शर्मा	14
5.	शिक्षा में तकनीक का प्रयोग	बलबीर गैना	17
6.	सोशल मीडिया: वरदान या अभिशाप	आशीष गोयल	21
7.	राजस्थान के प्रमुख पर्यटक स्थल	मनीष कुमार मीणा	24
8.	परदेस और पर्व	सोनू कुमार	33
	❖ कहानियां और निबंध		
9.	डिजिटल युग में खोया बचपन	ज्योति गुप्ता	36
10.	वाइल्ड	डॉ. मनीष कुमार मौर्य	38
11.	भाषा में गिरता शिष्टाचार	हिमांशु अग्रवाल	43
12.	हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और औपनिवेशिक मानसिकता	ज्योति पाण्डेय	46
	❖ कविताएं		
13.	कामकाजी औरतें	शीला बाई मीणा	49
14.	दरिंदगी की शिकार एक लड़की का माँ के नाम भावुक संदेश	पंकज कुमार सिंह	51
15.	'सीख'	बसंत	53
16.	'मां'	तुषार उपलावदिया	54

17.	बिटिया की पापा से प्रार्थना	अमित कुमार	55
❖ साक्षात्कार		**साक्षात्कारकर्ता**	
18.	गणतंत्र दिवस 2025 के अवसर पर विभाग द्वारा आमंत्रित अतिथियों के साथ बातचीत	मधु बाला	57
19.	जुझारु गोपालक महंत श्री बक्शी राम जी से एक बातचीत	बलबीर गैना	61
❖ अनूदित कविताएं			
20.	जीरा (राजस्थानी लोकगीत)	सुरेश कुमार बिजारणिया	66
21.	हे त्रिपुरारी (भोजपुरी कविता)	वर्तिका राय	68
22.	ओ रे बाबुल (कुमाऊंनी लोकगीत)	स्वाति मेल्टी	70
23.	दहेज की समस्या (अवधी लोकगीत)	डॉ. राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी	72
❖ खबरों में हम:			
24.	पीआईबी		74
राजभाषा अनुभाग - उपब्धियों का एक वर्ष			
25.	समीक्षाधीन अवधि के दौरान राजभाषा अनुभाग की उपलब्धियां	अमित शंकर	101



वर्तिका राय,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(मुख्यालय)

सतत् पशुपालन और डेयरी कृषि

पशुधन सदियों से मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। यह भोजन, वस्त्र और आजीविका प्रदान करता है। हालाँकि, जैसे-जैसे वैश्विक जनसंख्या बढ़ती जा रही है, पर्यावरण संबंधी चिंताएँ भी बढ़ती जा रही हैं और पशुधन के प्रबंधन का तरीका और भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। सतत् पशुधन प्रबंधन वह मुख्य आधार है जिससे पशु-आधारित उत्पादों की आवश्यकता और पारिस्थितिकी कल्याण के साथ सामंजस्य स्थापित होता है।

एफएओ के अनुसार पशुधन, वैश्विक कृषि उत्पादन में 40% का योगदान देता है तथा लगभग 1.3 बिलियन लोगों को आजीविका तथा खाद्य एवं पोषण सुरक्षा देता है।





देहा भीतर श्वास है, श्वासे भीतर जीव।
जीवे भीतर वासना, किस बिधि पाइये पीव॥

-बाबा लाल

सतत् पशुधन कृषि क्या है?

सतत् पशुधन कृषि का अर्थ है पशुओं का प्रबंधन इस तरह करना कि डेयरी संबंधी वर्तमान आवश्यकताएं पूरी हों और साथ ही भावी पीढ़ियों के लिए डेयरी उत्पादों के उपयोग करने की क्षमता भी खतरे में न पड़े। सतत् पशुधन, कृषि की सतत् प्रथाओं, पशु कल्याण और वित्तीय व्यवहार्यता पर बहुत ज़ोर देता है। यह रणनीति इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि यह खाद्य सुरक्षा प्रदान करती है, संसाधनों की कमी को यथासंभव दूर करती है, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करती है और पशुओं के साथ नैतिक व्यवहार का समर्थन करती है। ये सभी एक स्वस्थ पृथ्वी और संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र के लिए ज़रूरी हैं। **एफएओ** के अनुसार , वैश्विक पशुधन उत्सर्जन प्रति वर्ष 7.1 जीटी CO2e है, जो समस्त मानवजनित जीएचजी उत्सर्जन का 14.5% है।

ग्रीनहाउस उत्सर्जन के कारण :

पशुपालन के सन्दर्भ में यदि बात की जाये तो ग्रीन हॉउस उत्सर्जन मुख्यतः दो स्थितियों में होता है-

i. गाय और भेड़ जैसे जुगाली करने वाले पशुओं के पेट में रेशेदार पौधों की सामग्री को पचाने की क्षमता होती है। इस पाचन प्रक्रिया के दौरान, उनके पेट में मौजूद सूक्ष्मजीव मीथेन का उत्पादन करते हैं, जो एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है। यह मीथेन डकार के माध्यम से वातावरण में छोड़ी जाती है।
ii. पशुधन से बड़ी मात्रा में खाद निकलती है, जिसका उचित प्रबंधन न करने पर मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड नामक अन्य शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस निकलती है।

अत्यधिक भूमि की आवश्यकता तथा वनों का क्षरण:

पशुओं के लिए चारागाह बनाने या खेतों में फसल उगाने के लिए जंगलों को साफ किया जाता है। वनों की कटाई से न केवल पृथ्वी की कार्बन डाई ऑक्साइड (CO2) को अवशोषित करने की क्षमता कम होती है, बल्कि पेड़ों को काटने और जलाने पर संग्रहीत कार्बन भी निकलती है। इसके अतिरिक्त पशु चारा उगाने के लिए बहुत ज़्यादा भूमि की आवश्यकता होती है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव पड़ता है और आवास तथा जैव विविधता नष्ट हो जाती है।

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत प्रति वर्ष औसतन 500 मिलियन टन फसल अवशेष उत्पन्न करता है, जिसमें से 92 मिलियन टन प्रति वर्ष जला दिया जाता है, जिसका संभावित रूप से पशुओं के चारे के रूप में उपयोग किया जा सकता है। हाल के संदर्भों में देखें तो पराली इसका ज्वलंत उदहारण है।

अत्यधिक जल का उपयोग : पशुओं के पीने, सफाई और चारा उत्पादन आदि के लिए काफी मात्रा में पानी की खपत होती है। पशुपालन से होने वाला जल संकट और जल प्रदूषण गंभीर पर्यावरणीय चिंताएँ हैं।

सतत् पशुपालन पद्धतियाँ क्या हैं?

सतत् पशुपालन पद्धति का उद्देश्य पारिस्थितिकी तंत्र, समुदायों और पशु कल्याण के दीर्घकालिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करते हुए पशु-व्युत्पन्न उत्पादों की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करना है। सतत् पशुधन कृषि में ऐसी प्रथाएँ शामिल हैं जो नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को कम करती हैं, पशुओं के साथ नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देती हैं, स्थानीय समुदायों का समर्थन करती हैं और किसानों के लिए आर्थिक लाभप्रदता बनाए रखती हैं।

- सही पशुधन नस्लों को चुनने के लिए जलवायु, पशु का वांछित उपयोग (मांस, दूध या श्रम के लिए), स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधन और बाजार की मांग शामिल हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता, उच्च उत्पादकता और प्रभावी संसाधन उपयोग जैसी वांछित विशेषताओं वाली नस्लों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इन नस्लों का स्थानीय जलवायु के साथ अनुकूलन किया जाना चाहिए। क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुकूल नस्ल का चयन गोपशुओं के स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है, उत्पादन प्रभावशीलता बढ़ा सकता है और सतत् कृषि और खाद्य सुरक्षा का समर्थन कर सकता है।
- चारे की कई उच्च उत्पादक किस्में मौजूद हैं, जबकि फसल अवशेष के साइलेज (silage) निर्माण, हे (hay) निर्माण और यूरिया-शीरा उपचार (urea- molasses treatment) जैसी प्रौद्योगिकियों का भी लाभ उठाया जा सकता है।
- पशुधन के कल्याण और सतत् कृषि के लिए उचित पशु पोषण और चारा प्रबंधन आवश्यक है। इसमें पशु को संतुलित आहार देना शामिल है जो पशु की उम्र, नस्ल और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उसकी अनूठी पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है। प्रीमियम पशु आहार की कृषि, कटाई और भंडारण सभी प्रभावी चारा प्रबंधन के घटक हैं। ये विधियाँ पशुओं के कल्याण में सहायक होती हैं, उत्पादकता को बढ़ाती हैं, खर्च के साथ-साथ पर्यावरण पर पशुधन कृषि के नकारात्मक प्रभावों को भी कम करती हैं।
- अपशिष्ट उत्पादन को घटाना, संसाधनों का पुनः उपयोग करना और कृषि उपोत्पादों को रिसाइकिल करना कृषि में कुशल अपशिष्ट प्रबंधन और संसाधन उपयोग के महत्वपूर्ण घटक हैं। इस रणनीति से पर्यावरण प्रदूषण कम होता है, पानी और पोषक तत्वों जैसे बहुमूल्य संसाधनों को संरक्षित किया जाता है और स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। खाद बनाना, फसल अवशेषों का एकीकरण और सटीक सिंचाई ऐसे तरीके हैं जो संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने, मृदा स्वास्थ्य को बेहतर करने और कृषि के पारिस्थितिकी प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। ये सभी कृषि की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने में भी सहायता करते हैं।
- यह सुनिश्चित करना कि पशुओं को उचित सम्मान और देखभाल दी जाए, कृषि में नैतिक पशु कल्याण मुद्दों का एक हिस्सा है। इसमें तनाव और दर्द को कम करने के अलावा उपयुक्त आवास, भोजन और चिकित्सा देखभाल भी प्रदान की जाती है। गोपशुओं के प्रति मानवीय व्यवहार और जवाबदेह प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए नैतिक व्यवहार, मानव हितों और पशुओं के कल्याण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।
- एंटीबायोटिक प्रतिरोध से निपटने और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने के लिए, कृषि में एंटीबायोटिक और कीटनाशकों का कम इस्तेमाल किया जाना चाहिए। एकीकृत कीट प्रबंधन, जैविक कृषि और मानवीय पशु प्रबंधन जैसी तकनीकों का उपयोग करके इसे पूरा किया

जा सकता है। हम इन प्रथाओं को प्राथमिकता देकर मानव स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित कर सकते हैं और सतत् कृषि प्रणालियों को आगे बढ़ा सकते हैं।

- बेहतर प्रजनन और आनुवंशिकी के लिए पौधों और पशुओं की ऐसी किस्मों/नस्लों का चयन करना जिसमें अधिक पैदावार, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उच्च गुणवत्ता सहित सभी वांछनीय गुण शामिल हों। इनसे स्थिरता, खाद्य सुरक्षा और कृषि उत्पादन बढ़ता है। आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी तकनीकें, जैसे कि आनुवंशिक इंजीनियरिंग और मार्कर-सहायता प्राप्त प्रजनन, इसे आगे ले जाने के लिए आवश्यक हैं। पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे- पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (AHIDF), डेयरी प्रसंस्करण एवं अवसंरचना विकास निधि (DIDF), राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम (NPDD) पशुपालन सांख्यिकी (AHS), राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP), पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण (LH & DCP), राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM), राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) इत्यादि की जानकारी प्राप्त करके इसमें उनका वांछित लाभ उठाया जा सकता है।
- चारा उत्पादन और उसके उपयोग के लिए चारा फसलों का विकास और प्रबंधन इस तरह से करना चाहिए जिससे पर्यावरण पर कम से कम नकारात्मक प्रभाव पड़े। यह जैविक कृषि, सटीक कृषि और पशु आहार में पोषक तत्वों के अधिकतम उपयोग जैसी तकनीकों को प्रोत्साहित करता है। ये विधियाँ संसाधनों की खपत और बर्बादी को कम करके अधिक आर्थिक लाभ प्रदान करती हैं और पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ गोपशु और कुक्कुट पालन में योगदान देती हैं।
- डिजिटल उपकरण, स्वचालित और डेटा-संचालित रणनीतियाँ गोपशु प्रबंधन में नवीन तकनीकों के उदाहरण हैं। ये विकास पशु व्यवहार, पोषण और स्वास्थ्य की रियल टाइम निगरानी करने, उत्पादकता बढ़ाने, संसाधनों की बर्बादी को कम करने और पशु कल्याण में सुधार को संभव बनाते हैं। IoT सेंसर, AI-संचालित एनालिटिक्स और स्वचालित फीडिंग सिस्टम कुछ उदाहरण हैं कि कैसे ये तकनीकें पशुओं को पालने और उनकी देखभाल करने के तरीकों में क्रांति ला रही हैं।
- कृषि गहन और विविध है। उसका उद्देश्य उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाना है, जबकि पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करना है। फसल चक्रण, कृषि वानिकी और एकीकृत कीट नियंत्रण कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हें यह रणनीति लचीलापन बढ़ाने, संसाधनों को बचाने और जैव विविधता का समर्थन करने के लिए एकीकृत करती है। इन सबसे दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिक स्थिरता मिलती है।



सतत् पशुपालन के लाभ

- सतत् पशुधन कृषि के माध्यम से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करते हुए पर्यावरण का संरक्षण करना तथा भावी पीढ़ियों को स्वस्थ और अनुकूल पर्यावरण प्रदान करना
- सतत् पशुधन कृषि द्वारा पशुपालकों को कृषि संबंधी उन्नत संसाधनों के प्रयोग में दक्षता प्रदान करना
- देश में डेयरी उत्पादों की मांग और आपूर्ति में सामंजस्य स्थापित करना
- सतत् पशुपालन पद्धति पशुधन कृषि के नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों जैसे वनों की कटाई, मिट्टी के कटाव और जल प्रदूषण को कम करने में मदद करते हैं। यह पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान देता है।
- सतत् पशुधन कृषि का उद्देश्य पशुओं से निकलने वाले मीथेन उत्सर्जन को कम करना है, जो एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है। भोजन और अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार जैसी प्रथाओं को लागू करने से जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिल सकती है।
- सतत् कृषि में पशुओं के साथ नैतिक तथा मानवीय व्यवहार करना, उनके रहने की उचित व्यवस्था करना शामिल है। इससे पशु कल्याण बेहतर होता है।
- सतत् पद्धतियां जल और चारे जैसे संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करती हैं, जिससे पशुधन उत्पादन में अपव्यय से बचा जा सकता है।
- सतत् कृषि से पशु-व्युत्पन्न उत्पाद सुरक्षित और उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं, क्योंकि पशु अधिक स्वस्थ होते हैं और एंटीबायोटिक्स तथा अन्य रसायनों पर कम निर्भर होते हैं।
- सतत् पशुपालन आय विविध स्रोतों से आती है, जिससे कृषक समुदाय को हर मौसम में आय मिलती रहती है।
- सतत् पद्धतियाँ ग्रामीण समुदायों में आजीविका में सुधार लाती हैं, संसाधनों तक समान पहुंच को बढ़ावा देती हैं तथा कृषक समुदायों के सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करती हैं।
- सस्टेनेबिलिटी के मुद्दों के बारे में उपभोक्ताओं की बढ़ती जागरूकता के कारण सतत् तरीके से उत्पादित पशु उत्पादों की मांग बढ़ी है, जिससे किसानों के लिए विपणन के अवसर उपलब्ध हुए हैं।



चुनौतियाँ और बाधाएँ

- वनों की कटाई, मृदा क्षरण और जल प्रदूषण जैसे पर्यावरणीय प्रभाव।
- पशु-आधारित प्रोटीन की बढ़ती मांग को पूरा करते हुए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना।
- संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना और अपव्यय को न्यूनतम करना।
- पशुओं के लिए मानवीय व्यवहार और रहने के लिए उचित आवास उपलब्ध कराना प्राथमिकता है, लेकिन इसे हासिल कर पाने की चुनौती है।
- पशुओं में होने वाले रोगों की रोकथाम और नियंत्रण।
- छोटे किसान जो अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं, उनके लिए सतत् पशुपालन कृषि पद्धतियों को अपना पाना।
- पशुधन आपूर्ति श्रृंखला में शामिल हितधारकों का स्थायित्व सुनिश्चित करना।
- जलवायु परिवर्तन से पशुपालन में आने वाली बाधाओं से निपटना
- उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं को सतत् और पौध-आधारित आहार की ओर ले जाना।
- प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए निवेश और प्रशिक्षण की भारी आवश्यकता को पूरा कर पाना।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं पर विचार किया जाए तथा जिम्मेदार और कुशल कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, सतत् पशुधन प्रबंधन केवल एक विकल्प नहीं है, यह हमारी पृथ्वी के स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए एक आवश्यकता है। पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, पशु कल्याण को प्राथमिकता देने और स्थानीय समुदायों का समर्थन करने वाली प्रथाओं को अपनाकर, हम पशु उत्पादों की वैश्विक मांग को पूरा करने और अपने पर्यावरण की सुरक्षा के बीच संतुलन बना सकते हैं। चुनौतियाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी, बेहतर संसाधन दक्षता और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र सहित असंख्य लाभ, प्रयास को सार्थक बनाते हैं।

हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि-समानै।
नीर-सनेही कों लाय कलंक, निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।

-घनानंद



डॉ. सुदेशना दास
चारा सस्यविज्ञानी
सह निदेशक प्रभारी
क्षेत्रीय चारा केंद्र, कल्याणी

पशुओं के लिए चारे का महत्व



पशुपालन भारतीय अर्थव्यवस्था और कृषि व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। पशुओं से हमें दूध, मांस, ऊन, चमड़ा और कृषि कार्यों में सहायता मिलती है। लेकिन पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए संतुलित और पौष्टिक आहार आवश्यक होता है। चारा न केवल पशुओं के पोषण के लिए अनिवार्य है, बल्कि उनके स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन और संपूर्ण विकास में भी अहम भूमिका निभाता है। उचित पोषण न मिलने से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिससे उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इसलिए चारे का सही चुनाव और प्रबंधन पशुपालन की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

चारे का महत्व

पशुओं के लिए चारे का महत्व कई पहलुओं से समझा जा सकता है:

- **पशुओं के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक**

  पशुओं को उचित पोषण न मिलने से वे कमजोर हो जाते हैं और बीमारियों का शिकार हो सकते हैं। चारे में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज और विटामिन होते हैं, जो पशुओं की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। संतुलित आहार से पशु स्वस्थ रहते हैं और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

- **दुग्ध उत्पादन में वृद्धि**

  जो किसान डेयरी उद्योग से जुड़े हैं, उनके लिए उच्च गुणवत्ता वाला चारा आवश्यक होता है। यदि गाय और भैंस को पौष्टिक आहार दिया जाए, तो वे अधिक मात्रा में दूध का उत्पादन करती हैं और उसमें वसा की मात्रा भी उचित रहती है। उच्च गुणवत्ता वाला चारा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **प्रजनन क्षमता में सुधार**

  अच्छे चारे के सेवन से पशुओं की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है। कुपोषण के कारण पशु प्रजनन में समस्याओं का सामना कर सकते हैं। संतुलित चारा देने से पशु समय पर गर्भधारण करते हैं और स्वस्थ संतति को जन्म देते हैं।

- **कार्यक्षमता और शक्ति में वृद्धि**

  जो किसान बैल और घोड़ों का उपयोग कृषि कार्यों या परिवहन के लिए करते हैं, उनके लिए चारा विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। उचित आहार से पशुओं की कार्यक्षमता बढ़ती है और वे लंबे समय तक स्वस्थ रहते हैं।

- **आर्थिक लाभ**

  संतुलित चारा देने से पशुओं की उत्पादकता बढ़ती है, जिससे किसानों को अधिक लाभ होता है। पौष्टिक आहार के कारण पशु कम बीमार पड़ते हैं और उनके उपचार पर कम खर्च आता है। इसके अलावा, दूध, मांस और अन्य उत्पादों की गुणवत्ता बेहतर होती है, जिससे बाजार में अच्छी कीमत मिलती है।

चारे के प्रकार

चारा मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है:

- **हरा चारा -** हरा चारा पशुओं के लिए सबसे पौष्टिक माना जाता है। इसमें पानी की अधिक मात्रा होती है और यह पशुओं को ऊर्जा प्रदान करता है। कुछ प्रमुख हरे चारे इस प्रकार हैं:

  नेपियर घास - दूध देने वाले पशुओं के लिए उत्तम चारा।

  बरसीम - सर्दियों में उगाया जाने वाला पौष्टिक चारा।

  ज्वार और बाजरा - गर्मियों में उपयुक्त, पौष्टिकता से भरपूर।

मक्का - प्रोटीन और फाइबर से युक्त, पशुओं के लिए फायदेमंद।

- **सूखा चारा**

यह चारा तब उपयोगी होता है जब हरे चारे की उपलब्धता कम होती है। इसे लंबे समय तक रखा जा सकता है। कुछ प्रमुख सूखे चारे हैं:

सूखी घास, गेंहू और धान का भूसा
कड़बी - जैसे गन्ने की पत्तियाँ, मूँगफली के छिलके आदि।

- **संकेंद्रित चारा**

यह उच्च ऊर्जा और प्रोटीन से भरपूर चारा होता है, जिसे दूध देने वाले और गर्भवती पशुओं को दिया जाता है। इसके अंतर्गत आते हैं:

दलहन - अरहर, चना, मूँग आदि।
तेल की खली - सरसों, सोयाबीन, नारियल की खली।
अनाज - मक्का, जौ, चावल, गेहूं आदि।

<u>चारा प्रबंधन और भंडारण के तरीके</u>

चारे का सही प्रबंधन करने से इसकी गुणवत्ता बनी रहती है और इसे लंबे समय तक संरक्षित किया जा सकता है।

- **चारा संग्रहण**

साइलेज - यह हरे चारे को लंबे समय तक संरक्षित करने की विधि है, जिसमें चारे को वायुरुद्ध (airtight) स्थान पर रखा जाता है ताकि उसमें मौजूद पोषक तत्व नष्ट न हों।
हे मेकिंग - इसमें हरे चारे को सुखाकर संग्रहित किया जाता है। यह विधि बरसीम और नेपियर घास के लिए उपयुक्त है।

<u>भंडारण के उचित तरीके</u>

- सूखे चारे को नमी और कीड़ों से बचाने के लिए उसे सूखी और हवादार जगह पर रखना चाहिए।
- साइलेज को अच्छी तरह से ढककर रखना चाहिए ताकि उसमें किसी भी प्रकार का फफूंद न लग सके।
- अनाज आधारित चारे को सुरक्षित रखने के लिए प्लास्टिक बैग या एयरटाइट ड्रम का उपयोग करना चाहिए।

<u>चारे में मिलावट और इसके दुष्प्रभाव</u>

आजकल बाजार में चारे में मिलावट भी की जा रही है, जिससे पशुओं की सेहत को निम्नलिखित गंभीर नुकसान हो सकते हैं:

- **पाचन तंत्र की समस्या** - निम्न गुणवत्ता वाले चारे से पशुओं को अपच, गैस और अन्य समस्याएँ हो सकती हैं।

- **दूध की गुणवत्ता में गिरावट** - यदि पशु को मिलावटी चारा दिया जाए, तो उसके दूध की गुणवत्ता खराब हो जाती है।
- **बीमारियों का खतरा** - केमिकल युक्त चारा पशुओं के स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है।

चारा, पशुपालन का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसकी गुणवत्ता और उपलब्धता पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादकता और किसानों की आर्थिक स्थिति को सीधे तौर पर प्रभावित करती है। किसानों को पशुओं को संतुलित आहार, पौष्टिक चारा देने और चारे का उचित भंडारण करने पर भी ध्यान देना चाहिए ताकि पशु स्वस्थ रहें और अधिक उत्पादन प्राप्त हो सकें। इसके अलावा, सरकार और पशुपालन विभाग को किसानों को चारा उगाने और भंडारण करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।

यदि हम सही तरीके से चारे का प्रबंधन करें, तो पशुपालन उद्योग को और अधिक समृद्ध बना सकते हैं तथा किसानों की आय भी बढ़ा सकते हैं। एक संतुलित चारा न केवल पशुओं के लिए लाभदायक है, बल्कि यह पूरे कृषि क्षेत्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मैं हूँ विजित, जीत का प्यासा विजित, भूल जाऊँ कैसे?
वह संघर्षण की घटिका है बसी हुई हिय में ऐसे,—

जैसे माँ की गोदी में शिशु का दुलार बस जाता है,
जैसे अंगुलीय में मरकत का नवनग कस जाता है;

'विजय-विजय' रटते-रटते मेरा मनुआ कल-कीर हुआ,
फिर भी असि की धार कुंठिता है, ख़ाली तूणीर हुआ!

-बालकृष्ण शर्मा नवीन (पराजय-गीत)



राकेश कुमार
एफ.ए.सी.एल.
क्षेत्रीय चारा केंद्र, कल्याणी

पर्यावरण: जीवन का आधार

पर्यावरण वह अमूल्य धरोहर है, जिससे समस्त प्राणी जगत का जीवन संचालित होता है। यह प्राकृतिक संसाधनों तथा जैविक और अजैविक तत्वों का एक संतुलित तंत्र है, जिसमें भूमि, जल, वायु, वनस्पति, जीव-जंतु और अन्य पारिस्थितिकीय तत्व शामिल होते हैं। यह न केवल जीवन को पोषित करता है, बल्कि प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होता है। किंतु, आधुनिक औद्योगीकरण, शहरीकरण और मनुष्य के लालच के कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है।

पर्यावरण हमारे अस्तित्व और विकास का आधार है। हमारे जीवन में इसका महत्व निम्नानुसार हैं:

जीवन के लिए आवश्यक संसाधन - पर्यावरण से हमें वायु, जल, भोजन और आश्रय प्राप्त होता है।

जैव विविधता का संरक्षण - पर्यावरण विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं और सूक्ष्म जीवों के लिए आवास प्रदान करता है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव - शुद्ध पर्यावरण स्वास्थ्य को बनाए रखता है, जबकि प्रदूषित पर्यावरण बीमारियों को जन्म देता है।

पर्यावरणीय समस्याएँ और उनके कारण

आज मानव सभ्यता जिस तीव्र गति से प्रगति कर रही है, उसने पर्यावरण के संतुलन को गहरा नुकसान पहुँचाया है। निम्नलिखित कारणों से पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं:

वायु प्रदूषण - कारखानों, वाहनों, पराली जलाने और अन्य मानवीय क्रियाकलापों से निकलने वाले धुएँ ने वायुमंडल को प्रदूषित कर दिया है।

जल प्रदूषण - औद्योगिक कचरा, घरेलू कचरा, प्लास्टिक और रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से जल स्रोत दूषित हो रहे हैं।

वनों की कटाई - शहरीकरण, कृषि विस्तार और लकड़ी के अंधाधुंध उपयोग से वनों की कटाई बढ़ रही है, जिससे जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का ह्रास हो रहा है।

भूमि क्षरण - अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो रही है।

प्लास्टिक प्रदूषण - प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग ने पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुँचाया है, क्योंकि यह जैव अपघटनीय नहीं होता।

आवश्यक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज आदि प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिससे उनका तेजी से क्षरण हो रहा है।





<u>पर्यावरण संरक्षण के उपाय</u>

यदि हमें पृथ्वी को रहने योग्य बनाना है, तो पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। इसके लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं:

वृक्षारोपण को बढ़ावा देना - अधिक से अधिक पेड़ लगाने से वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है और पर्यावरण को संतुलित रखा जा सकता है।

प्लास्टिक का न्यूनतम उपयोग - प्लास्टिक बैग, बोतलों और अन्य उत्पादों का कम से कम उपयोग करना चाहिए और पुन: उपयोगी उत्पादों को अपनाना चाहिए।

जल संरक्षण - वर्षा जल संचयन, पानी की बर्बादी रोकने और जल पुनर्चक्रण जैसी तकनीकों को अपनाना चाहिए।

पर्यावरण जागरूकता अभियान - लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के प्रति शिक्षित और जागरूक करना चाहिए।

वन संरक्षण कानूनों को लागू करना - सरकार को कड़े वन संरक्षण कानून बनाने चाहिए और उनका क्रियान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए।

कार्बन फुटप्रिंट कम करना - कम ईंधन खपत वाले वाहन अपनाने, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने और ऊर्जा दक्षता बढ़ाने से कार्बन उत्सर्जन कम किया जा सकता है।

<u>भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयास</u>

भारत में सरकार और कई संगठनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए कदम उठाए गए हैं:

स्वच्छ भारत अभियान - इस योजना के तहत कचरा प्रबंधन और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया है।

वन महोत्सव - यह हर साल आयोजित होने वाला वृक्षारोपण अभियान है, जिसमें लाखों पेड़ लगाए जाते हैं।

प्लास्टिक प्रतिबंध - कई राज्यों में सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया है।

नवीकरणीय ऊर्जा मिशन - सरकार सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चला रही है।



पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यदि हम आज अपने संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर संकट का सामना करना पड़ेगा। हमें सतत विकास और पर्यावरण संतुलन के बीच सामंजस्य स्थापित करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए योगदान देना चाहिए, चाहे वह वृक्षारोपण हो, जल संरक्षण हो, ऊर्जा की बचत हो या प्लास्टिक का कम उपयोग हो।

यदि हम सब मिलकर अपने पर्यावरण को बचाने के लिए एकजुट हो जाएँ, तो न केवल हमारा वर्तमान सुरक्षित रहेगा, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी एक सुंदर, स्वस्थ और समृद्ध पृथ्वी पर जी सकेंगी। आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि पर्यावरण की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेंगे, ताकि हमारी धरती हमेशा हरी-भरी और जीवनदायिनी बनी रहे।



श्वेत प्रकाश शर्मा
तकनीशियन
पशु संगरोध एवं प्रमाणीकरण सेवा (पूर्वी क्षेत्र), कोलकाता

वनाग्नि: एक संकट

वनाग्नि या दावानल का अर्थ है वन की आग जो पेड़ों की दहनियों के एक दूसरे से रगड़ खाने से उत्पन्न होती है और दूर तक फैलती चली जाती है। दावानल, दावाग्नि, वन्यानल, वनाग्नि, ज्वलनशील वनस्पति के क्षेत्र में एक अनियोजित, अनियन्त्रित और अप्रत्याशित अग्नि है।

विश्व भर में आज प्रकृति प्रचंड रौद्र रूप दिखा रही है, वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन ग्लोबल वॉर्मिंग के रूप में एक विकराल संकट बन गया है। विगत कई वर्षों से वनाग्नि ने पृथ्वी के कई प्रमुख वनों में कहर बरपाया है। इस कारण लाखों पशु-पक्षियों को उसने अपनी चपेट में ले लिया है। प्रकृति, जो लाखों वर्षों से इनका भरण पोषण करती आ रही है, आज जब वही जननी स्वयं सुरक्षित नहीं है तो प्रकृति के बच्चे (पशु-पक्षी) कहां पलायन करेंगे। पृथ्वी के फेफड़े कहे जाने वाले अमेज़न के जंगलों की बात करें या ऑस्ट्रेलिया के जंगलों की, प्रकृति की ऐसी दुर्गति इससे पहले कभी नहीं देखी गई, आज से पहले ऐसी स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हुई परंतु आज हमारे सामने वनाग्नि एक संकट के रूप में उत्पन्न हुई है।



होगा। जंगल का कटाव और वन क्षेत्र पर खनन का बढ़ता लोभ पृथ्वी के जंगलों के लिए एक खतरा बनता जा रहा है। लगातार बढ़ती जा रही वनाग्नि की घटनाएँ समाज के समक्ष बड़ी चिंता के रूप में उभर रही हैं। विकसित और विकासशील देश, अनेकों लेकिन सीमित संसाधन होते हुए भी एक दूसरे को पीछे छोड़ने की कोशिश में दिन-रात प्रकृति का असीमित दोहन कर रहे हैं।

बीते कई वर्षों से ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में वनाग्नि ने भीषण दुर्गति की है। मुख्यतः वहां के न्यू साउथ वेल्स और क्वींसलैंड क्षेत्रों ने इसका विकराल रूप देखा है। ब्राज़ील का अमेजन वर्षावन, दक्षिण अमेरिका के अमेजन बेसिन के करीब 55 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल से लगभग दोगुना है। यहां लगभग 39 हजार करोड़ पेड़-पौधों की 16 हजार से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। विश्व के सबसे बड़े इस जंगल से विश्व की दूसरी सबसे बड़ी नदी बहती है, जिसे "अमेजन नदी" के नाम से जाना जाता है। नौ देशों के विशाल क्षेत्र में फैले अमेजन के जंगल, विश्व को 20% ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जिस कारण इन्हें "पृथ्वी का फेफड़ा" भी कहा जाता है, लेकिन एक महीने से भी अधिक समय से धूं-धूं कर जलने के कारण आज अमेजन के जंगल की सांसे थमती दिख रही हैं और पृथ्वी का भविष्य आईसीयू पर जाता दिख रहा है। भारत की बात करें तो उत्तराखंड के अल्मोड़ा एवं नैनीताल ज़िलों में भी बड़े पैमाने पर वनाग्नि देखी गई है।



विश्व भर में वनाग्नि की अधिकांश घटनाएँ मानव-निर्मित हैं। वनाग्नि के कुछ प्राकृतिक कारण भी हैं जैसे बिजली गिरना, पेड़ की सूखी पत्तियों के मध्य घर्षण, तापमान की अधिकता, पेड़-पौधों में शुष्कता आदि। वर्तमान में वनों में मानवीय अतिक्रमण व दखल तथा विभिन्न प्रकार के मानवीय क्रियाकलाप जैसे-पशुओं को चराना, बिजली के तारों का वनों से होकर गुज़रना तथा वनों में लोगों का धूम्रपान करना आदि के कारण इन घटनाओं में वृद्धि हुई है। भारत मे वनाग्नि से हुई वार्षिक हानि का आकलन भारतीय वन सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है। इसकी रिपोर्ट के अनुसार

प्राकृतिक संपदा को काफी नुकसान पहुँचा है। वार्षिक वन हानि 440 करोड़ रुपए होने का अनुमान है। इससे जंगलों में रहने वाले जनजातीय समुदायों तथा ग्रामीणों की आजीविका को भी नुकसान पहुँचा है। आँकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग 300 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिये प्रत्यक्ष रूप से वन उत्पादों पर निर्भर हैं। आँकड़ों के मुताबिक, विश्व भर में वनाग्नि को जलवायु परिवर्तन जनित महत्त्वपूर्ण विपदा मानते हुए इससे निपटने के लिये वैश्विक स्तर पर नीति निर्माण की उपयोगिता पर ज़ोर देने की आवश्यकता है, जो वनाग्नि और उससे संबंधित विभिन्न महत्त्वपूर्ण पहलुओं का समाधान करती हो।

ऐसे में पृथ्वी पर संकट भी बढ़ रहा है। प्रकृति को दरकिनार कर हमारे अनियमित विकास ने पृथ्वी के संतुलन को बिगाड़ दिया है, जिसका खामियाजा वर्तमान पीढ़ी तो भुगत ही रही है, साथ ही आने वाली पीढ़ी को भी भुगतना पढ़ेगा। हमने विकास के नाम पर पृथ्वी को प्राण वायु देने वाले जंगलों को बर्बाद कर दिया है व इसकी गंभीरता को नज़रअंदाज कर रहे हैं। इसलिए मानव जीवन को बचाने के लिए पृथ्वी को बचाना जरूरी है और पृथ्वी को बचाने के लिए जंगलों को बचाना आवश्यक है। पर्यावरण को बचाने का कार्य प्रत्येक नागरिक को अपना कर्तव्य समझकर करना होगा, तभी हम आने वाली पीढ़ियों के साथ ही पृथ्वी को भी एक सुरक्षित भविष्य प्रदान कर सकेंगे।

आइए, आज हम संकल्प लें कि पर्यावरण के हित के लिए और आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ ऑक्सीजन प्रदान करने के लिए इस पृथ्वी पर वृक्षारोपण जरूर करेंगे और उसे फिर से हरा-भरा बनाएंगे।

चुनौतियाँ उपहार हैं जो हमें गुरुत्वाकर्षण के एक नए केंद्र की तलाश करने के लिए मजबूर करती हैं। उनसे लड़ो मत। बस खड़े होने का एक नया तरीका खोजो।

-ओपरा विनफ्रे



बलवीर गैना,
सहायक पंजीकार
केंद्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर

शिक्षा में तकनीक का प्रयोग

शिक्षा क्या है? यह प्रश्न जितना सरल प्रतीत होता है, इसका उत्तर उतना ही व्यापक, गहन और बहुआयामी है। शिक्षा मात्र पाठ्यपुस्तकों से सूचना अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं है, यह तो व्यक्ति के चरित्र, चेतना और चिंतन को विकसित करने की यात्रा है। शिक्षा वह दीप है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला फैलाता है। वह मानव के अंदर छिपी संभावनाओं के बीज को पहचानता है और उन्हें अंकुरित करके जीवन के बगीचे को पुष्पित करता है।





एक विद्यार्थी एवं अभिभावक के रूप में मैंने वर्षों तक यह अनुभव किया है कि शिक्षा तभी सार्थक होती है, जब वह मनुष्य को बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा दे। वह केवल नौकरी के लिए नहीं, जीवन जीने के लिए तैयार करे। ऐसे में जब तकनीक शिक्षा में प्रवेश करती है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि हम उसे सहयोगी की भूमिका में स्वीकार करें, न कि शिक्षा का पर्याय मान लें।

आज का युग तकनीक का युग है। जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ तकनीक ने अपनी उपस्थिति दर्ज न कराई हो। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। जब विद्यालय/महाविद्यालय में स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर, डिजिटल पुस्तकालय, और ई-लर्निंग जैसे साधन आए, तो विद्यार्थियों/अभिभावकों में एक नया उत्साह दिखा। शिक्षक अब केवल पाठ पढ़ाने वाले नहीं रहे, वे फेसिलिटेटर यानी 'ज्ञान-संचालन में मार्गदर्शक' बन गए। यह तकनीक शिक्षकों को पढ़ाई में सहयोग करने के साथ-साथ स्वयं में परिवर्तन लाने में भी सहायक साबित हो रही है। सीखने के नए-नए तरीकों से उन्हें अवगत करा रही।

विधार्थी एवं अभिभावक भी तकनीक से जुड़कर अधिक जिज्ञासु और सक्रिय दिखाई देने लगे हैं। भूगोल के मानचित्र अब केवल कागज पर नहीं, स्क्रीन पर सजीव हो गए हैं। विज्ञान के सिद्धांत अब केवल शब्दों में नहीं, प्रयोगों और एनिमेशन में सामने आने लगे हैं। इतिहास की घटनाएँ चलचित्र बनकर बच्चों की आँखों के सामने जीवंत हो उठीं हैं। हिंदी जैसे विषय के पाठ को यह तकनीक इतनी रोचकता से प्रस्तुत करती है कि बच्चों को पूरा भावार्थ अच्छी तरह से समझ में आ जाता है। यह परिवर्तन, शिक्षा को अधिक प्रभावी और रोचक बनाने की दिशा में निश्चित ही एक बड़ी उपलब्धि है।

लेकिन समय के साथ हमने यह भी देखा कि तकनीक अपने साथ कुछ नए संकट भी लेकर आई है। सबसे पहले तो बच्चे तकनीक के इतने अभ्यस्त हो गए कि अब उन्हें पारंपरिक पढ़ाई नीरस लगने लगी है। अब वे पाठ्यपुस्तकों को कम और स्क्रीन को अधिक प्राथमिकता देते हैं। इसके परिणामस्वरूप न केवल उनकी ध्यान देने की क्षमता/एकाग्रता में गिरावट आई, बल्कि चिंतन-मनन और समझ की प्रवृत्ति भी कम हो गई है। बहुत सी बार यह भी देखा जाता है कि कक्षा में जब पढ़ाया जाता है, तब बच्चे इस ओर बहुत कम ध्यान देते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि घर जाकर यूट्यूब के माध्यम से भी पढ़ाई कर सकते हैं। इस तरह बच्चों का कक्षा में ध्यान कम हुआ है।





दूसरी चिंता यह है कि तकनीक के अत्यधिक उपयोग से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर भी विपरीत

प्रभाव पड़ा है। घंटों मोबाइल या लैपटॉप पर समय बिताने से उनकी आँखों की रोशनी, मानसिक एकाग्रता और नींद की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। सामाजिक व्यवहार, सहानुभूति और आपसी संवाद जैसी मानवीय खूबियाँ धीरे-धीरे घट रही हैं। आज के बच्चे अधिक देर तक बातचीत नहीं कर पाते, उनके पास शब्दों की कमी हो जाती है क्योंकि तकनीक उनसे बड़े बुजुर्गों के साथ बैठकर नए शब्द, नई भाषा सीखने के अवसर छीन रही है।

मैंने यह भी महसूस किया कि तकनीक ने बच्चों की मौलिकता को प्रभावित किया है। जहाँ पहले वे निबंध या उत्तर स्वयं सोचकर लिखते थे, अब वे सीधे गूगल से उत्तर खोजकर प्रस्तुत कर देते हैं। इससे उनके भाषा कौशल, कल्पना शक्ति और रचनात्मकता में गिरावट आई है। शिक्षक की भूमिका भी कई बार मात्र 'सहायक लिंक भेजने वाले' तक सिमट कर रह जाती है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है - डिजिटल असमानता। विद्यालय/महाविद्यालय में कई ऐसे विद्यार्थी भी होते हैं जो जिनके पास स्मार्टफोन, लैपटॉप, कम्प्यूटर या इंटरनेट की सुविधा नहीं है। कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण शुरू हुआ, तब यह असमानता और स्पष्ट हो गई। कुछ बच्चे समय पर ऑनलाइन कक्षाओं में जुड़ने में समर्थ थे, जबकि कई बच्चे तकनीकी साधनों के अभाव में पढ़ाई से कट गए। इससे शिक्षा की वह समानता की भावना कहीं न कहीं कमजोर प्रतीत हुई।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, हमारे देश के विद्यालयों/महाविद्यालयों में एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। देश के विद्यालयों/महाविद्यालयों को तकनीक को शिक्षा का पूरक मानना चाहिए, स्थानापन्न नहीं। सप्ताह में एक दिन पूरी तरह से तकनीक आधारित शिक्षण दिया जाना चाहिए–जिसे हम 'डिजिटल डे' कह सकते हैं। बाकी दिनों में पारंपरिक पद्धतियों जैसे ब्लैकबोर्ड, पाठ्यपुस्तकों, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, श्रवण और लेखन अभ्यास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस मिश्रित शिक्षण प्रणाली से हमें बहुत अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। हमारे शिक्षकों एवं अभिभावकों को भी बच्चों को तकनीक के साथ-साथ मानवता, नैतिकता और सामाजिक सरोकारों से जोड़ने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। हम यह मानते हैं कि शिक्षा केवल जानकारी नहीं, बल्कि संवेदना और विवेक भी है। तकनीक ज्ञान तक पहुँचाती है, परन्तु शिक्षक एवं आभिभावक उसे समझ में बदलते हैं।

अंततः मेरा मत है कि तकनीक ने शिक्षा को सहज, रोचक और प्रभावी बनाया है- इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु यदि हम इसकी अति कर बैठे, तो यही तकनीक शिक्षा को यांत्रिक, संवेदनहीन और असंतुलित बना सकती है। हमें बच्चों एवं अभिभावकों को यह सिखाना होगा कि

तकनीक का उपयोग करें, पर उसकी गुलामी न करें क्योंकि तकनीकी उपकरण, परंपरागत पाठ्यपुस्तकों का पर्याय कभी नहीं बन सकते।

शिक्षा तब ही पूर्ण है जब वह विचार भी दे, जीवन मूल्य भी। तकनीक भी तब ही सार्थक है जब वह इन दोनों को मजबूत करने में सहायक हो। जब ऐसा होगा तभी हम देश के लिए अच्छे नागरिक तैयार कर पाएंगे।

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद

चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

-नागार्जुन (अकाल और उसके बाद)



आशीष गोयल
अनुभाग अधिकारी
(मुख्यालय)

सोशल मीडिया: वरदान या अभिशाप

हाल ही में राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित एक क्विज़ शो में एक ऐसा मामला सामने आया जहाँ एक 10 वर्षीय बच्चे ने प्रसिद्ध होस्ट और बॉलीवुड अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन के साथ क्विज़ प्रतियोगिता में भाग लिया। पांचवीं कक्षा के छात्र ने पूरे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया और सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग का विषय भी बन गया। इस शो पर वह 83 वर्षीय अभिनेता को लगातार ऐसे शब्दों से टोकता हुआ दिखाई दिया जिसे "अति आत्मविश्वास" और "अहंकार" के रूप में वर्णित किया जा सकता है। जब उक्त एपिसोड राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित किया गया, तो यह सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। इसमें बच्चे के अति आत्मविश्वास को देखकर लोग अपना आपा खो बैठे और उसे उसके बुरे व्यवहार के लिए सोशल मीडिया पर ट्रोल करना शुरू कर दिया। लोगों ने उसके माता-पिता को उनकी पालन-पोषण शैली के लिए जिम्मेदार ठहराया और कहा कि वे अपने बच्चे के पालन-पोषण में विफल रहे हैं। बाद में राष्ट्रीय स्तर पर सोशल मीडिया पर उत्पीड़न का सामना करने के बाद, माता-पिता ने सोशल मीडिया का सहारा लिया और उन लोगों की आलोचना की जिन्होंने उनके बेटे को ट्रोल किया और सोशल मीडिया पर नफरत भरे संदेश पोस्ट किए क्योंकि इससे उनके बच्चे को मानसिक आघात का सामना करना पड़ा।

इस निबंध का विषय यही मुद्दा है कि क्या आधुनिक तकनीक से लैस हालिया दुनिया में सोशल मीडिया का उपयोग वरदान है या अभिशाप। यहां इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि क्या 10 साल के बच्चे को ट्रोल करना उचित है देश में आजकल सोशल मीडिया का चलन बहुत ज्यादा बढ़ गया है और जब कोई छोटा सा भी मुद्दा उठाया जाता है तो लोग सोशल मीडिया पर अपने विचार और कमेंट्स पोस्ट करने से बिल्कुल भी परहेज नहीं करते। यहां तक कि इंस्टाग्राम, फेसबुक, लिंक्डइन, व्हाट्सएप, स्नैपचैट जैसे विभिन्न ऐप्स में उपयोग किए जाने वाले फ़िल्टर भी 10 वर्षीय

बच्चे के उत्पीड़न को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, जैसा कि जो इस मामले में देखा गया। आजकल ज्यादातर यूजर्स मोबाइल फोन का इस्तेमाल काम से ज्यादा सोशल मीडिया के लिए ही करते हैं। मेट्रो, बस, कार्यालयों या घर जैसे विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर देखा जा सकता है कि लोग रचनात्मक काम के लिए मोबाइल फोन का उपयोग करने के बजाय सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक समय दे रहे हैं। मोबाइल फोन अब उपयोगकर्ताओं के लिए ऑनलाइन रहने और कुछ उपयोगी क्रियाकलापों में शामिल होने के बजाय सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक समय बिताने का एक उपकरण बन गया है।

लोग ज्यादातर समय सोशल मीडिया पर बिताते हैं, अन्य लोगों की प्रोफाइल स्क्रॉल करते हैं या विभिन्न घटनाओं या गतिविधियों पर अपनी टिप्पणी देना शुरू कर देते हैं। 150 करोड़ लोगों के देश में सोशल मीडिया का उपयोग इतना बढ़ गया है कि आज की तारीख में भारत में 120 करोड़ लोगों के पास मोबाइल फोन मौजूद हैं और हाल के समय में देश में तकनीकी विकास के कारण मोबाइल फोन की संख्या और बढ़ने वाली है।

मेट्रो में यात्रा करते समय, मैंने अपने दोस्तों के साथ एक छोटा सा सामाजिक प्रयोग किया। हमने दिवाली के अवसर पर उन लोगों को मिठाइयाँ वितरित कीं, जो मोबाइल फोन या किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का उपयोग करते हुए नहीं पाए गए। मुझे आश्चर्य हुआ कि हम ऐसे 10 लोगों को भी मिठाइयाँ नहीं दे पाए जो खाली बैठे हुए हों और आसपास के वातावरण का आनंद ले रहे हों। अधिकांश लोग सोशल मीडिया में लिप्त पाए गए या अपने ईयर प्लग के माध्यम से संगीत सुनते हुए या अपने फोन पर वीडियो गेम खेलते हुए पाए गए। मैंने जिन 10 व्यक्तियों को देखा, उनमें से केवल एक व्यक्ति खाली बैठा था और बाकी लोग इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में लगे हुए थे।

भारत जैसे इतनी बड़ी आबादी वाले देश में सोशल मीडिया के बढ़ते चलन के कारण नागरिकों का काफी समय बर्बाद हो रहा है। युवा PUBG जैसे वीडियो गेम या सोशल मीडिया पर अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं। यह चिंता का विषय है। लगभग 20-25 साल पहले जब सोशल मीडिया का आगमन नहीं हुआ था, तब मनोरंजन का साधन दोस्तों के साथ फिल्म देखना या बाहर खेलना और अच्छा समय बिताना होता था। मोबाइल फोन सभी लोगों के लिए सुलभ नहीं थे और केवल आपातकालीन समय में ही उपयोग किए जाते थे। उस समय, फ़ोन कॉल के लिए, किसी को ISD/STD कॉल करने के लिए फ़ोन बूथ पर जाना पड़ता था।

अगर क्विज शो पर आए बच्चे की बात की जाए तो लोगों ने उसके माता-पिता पर उसकी गलत परवरिश के आरोप लगाए। सोशल मीडिया पर बच्चे में विभिन्न सिंड्रोम या कमियां होने का दावा किया, जिससे बच्चे का उत्पीड़न हुआ। लोगों को यह देखना होगा कि

बच्चा 10 साल का है और वह दूसरों की तरह परिपक्व नहीं हो सकता है। किसी बच्चे को उसके असभ्य व्यवहार के लिए ट्रोल करना और वह भी सोशल मीडिया जैसे राष्ट्रीय मंच पर, सही नहीं है। समाज को बच्चे को वैसे ही स्वीकार करना चाहिए जैसे वह है और उस पर सही व्यवहार थोपने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। समाज को यह महसूस करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अलग है और यदि कोई बच्चा अहंकारी व्यवहार दिखाता है तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता या उसे ट्रोल नहीं किया जा सकता। बल्कि इसके पीछे के कारणों को जानना चाहिए।

हालांकि यह भी उतना ही सही है कि जो बच्चे अच्छे व्यवहार वाले होते हैं या जिनकी तारीफ की जाती है, वे भी सोशल मीडिया पर ट्रोल किए जाते हैं। यह उस मामले से स्पष्ट है जहां 10वीं कक्षा की सीबीएसई परीक्षा में टॉप करने वाली एक छात्रा को छोटी मूंछें रखने और लड़के की तरह दिखने के लिए ट्रोल किया गया था। ट्रोलिंग इतनी आगे बढ़ गई और लड़की को इस हद तक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा कि उसने पार्लर जाकर अपना पूरा मेकओवर करने और अच्छी ड्रेस पहनने के बाद अपना एक और वीडियो पोस्ट किया। सोशल मीडिया पर उसकी प्रशंसा उसके अंकों या 10वीं कक्षा की सीबीएसई परीक्षा में टॉप करने के लिए नहीं, बल्कि उसके मेकओवर के लिए की गई।

उपर्युक्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया का हमारे जीवन पर और उन लोगों के जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है जिन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जाता है या जो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन जाते हैं। लोगों को अपने कर्तव्यों का एहसास होना चाहिए और सोशल मीडिया पर पोस्ट करते समय मर्यादा और सम्मान बनाए रखना चाहिए। संक्षेप में, मैं यह कहना चाहता हूं कि आज की दुनिया में सोशल मीडिया के अपने फायदे और नुकसान हैं, लेकिन समाज को अपनी टिप्पणियां सावधानी से पोस्ट करनी चाहिए क्योंकि सोशल मीडिया किसी के जीवन को बदलने या प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

कुल मिलाकर, मैं यही कहूंगा कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया एक अभिशाप बन गया है, क्योंकि देश के युवा रील स्क्रॉल करने और वीडियो गेम खेलने में अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं और रचनात्कता से दूर हो रहे हैं।



मनीष कुमार मीणा,
निजी सहायक
(मुख्यालय)

राजस्थान के प्रमुख पर्यटक स्थल

राजस्थान में कई प्रसिद्ध स्थल हैं जो न केवल पर्यटन की दृष्टि से लोकप्रिय हैं, बल्कि ऐतिहासिक महत्व भी रखते हैं। जयपुर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़ और माउंट आबू ऐसी ही कुछ जगहें हैं। यहां भरतपुर का प्राकृतिक परिवेश है तो पुष्कर का मेला भी। आइए यहां के कुछ प्रमुख शहरों और उनके प्रमुख स्थलों पर नज़र डालते हैं:-

गुलाबी नगरी, जयपुर

जयपुर की स्थापना सन् 1727 में आमेर के राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। प्रिंस ऑफ वेल्स ने सन् 1876 में जयपुर का दौरा किया। उनके स्वागत के लिए, तत्कालीन महाराजा रामसिंह ने पूरे शहर को गुलाबी (हिर्मिची) रंग में रंगवाया। आमेर, नाहरगढ़, जयगढ़ के किले तथा गुलाबी नगरी जयपुर प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत हेतु तैयार हो गयी। जयपुर दुनिया का पहला ऐसा शहर है जो योजनाबद्ध तरीके से बनाया गया है। अपने रंग-बिरंगे रत्नों, आभूषणों, पर्यटन तथा अपने वैभवपूर्ण इतिहास के साथ, राजस्थान की राजधानी सबसे बड़ी पर्यटन नगरी बन गई है। इस शहर की संस्कृति को पारंपरिक तथा आधुनिकता का सम्मिश्रण बेजोड़ बनाता है। पर्यटन के स्वर्णिम त्रिकोण (गोल्डन-ट्राएंगल) का एक कोण, जयपुर है और बाकी दो दिल्ली, आगरा हैं। हवा महल, जयगढ़ फोर्ट, जल महल, गोविन्द देव जी मंदिर, मोतीडूंगरी गणेश मंदिर, नाहरगढ़ जैविक उद्यान, नाहरगढ़ क़िला तथा सिसोदिया रानी महल और बाग़ आदि जयपुर के प्रमुख पर्यटनीय स्थल हैं। आइए उनके बारे में जानते हैं:-

हवा महल



हवा महल बाहर से भगवान कृष्ण के मुकुट जैसा दिखाई देता है। सन् 1799 ई. में महाराजा सवाई प्रताप सिंह द्वारा बनवाया गया यह महल पाँच मंजिला है, जिसके वास्तुकार श्री लालचंद उस्ता थे। जयपुर की शान का प्रतीक हवा महल, बलुआ पत्थर से निर्मित है तथा राजस्थानी वास्तुकला और मुगल शैली का सम्मिश्रण है। इसमें 953 छोटे-छोटे झरोखे हैं जो बहुत सुंदर हैं। इनकी खासियत है कि गर्मी के मौसम में भी इन झरोखों के कारण गर्मी का अहसास नहीं होता है।

जयगढ़ फोर्ट



जयपुर के मध्य में स्थित जयगढ़ किला सन् 1726 में महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा सुरक्षा के लिए बनवाया गया था। इसमें बने शस्त्रागार, शस्त्र संग्रहालय, तोपें बनाने का कारखाना तथा विश्व की सबसे बड़ी तोप 'जयबाण' हैं। इस कारण पर्यटक जयपुर आकर इस तोप को जरूर देखना चाहते हैं। इस तोप को एक बार चलाया गया था जिससे शहर से 35 कि.मी. दूर एक तालाब का गड्ढा बन गया था। इसकी लम्बाई 6.15 मीटर (20.2 फीट) है तथा वजन 50 टन है। इसके 8 मीटर लंबे बैरल में 100 किलो गन पाउडर भरा जाता था।

जल महल

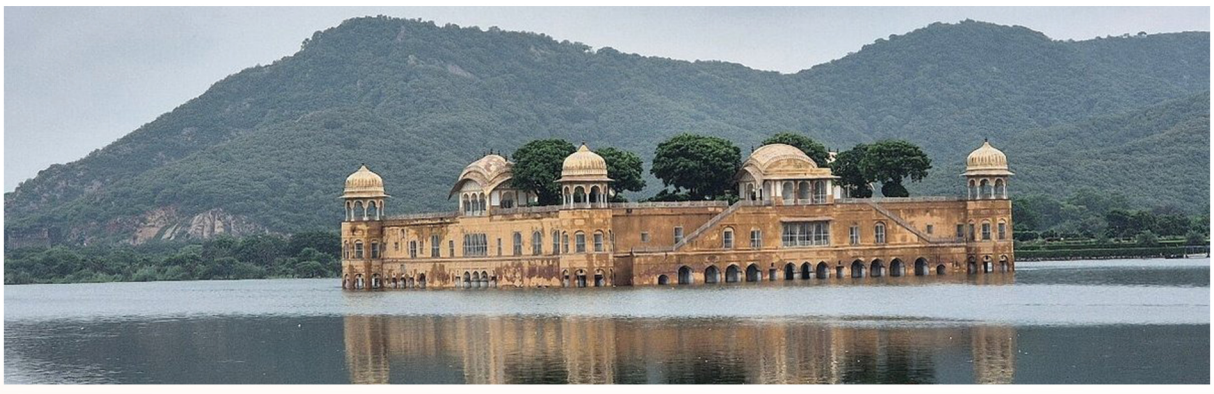

जयपुर में मानसागर झील के बीच में बना जल महल पानी पर तैरता प्रतीत होता है। इसकी पाल (किनारे) पर रोजाना स्थानीय तथा विदेशी पर्यटक मनमोहक नजारा देखने आते हैं। रात के समय जल महल रंग बिरंगी रोशनी में परी लोक सा लगता है। इसका निर्माण महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा 18वीं सदी में किया गया था। राजा अपनी रानी के साथ इस महल में खास वक्त बिताने आते थे तथा यहां राजसी उत्सव भी मनाए जाते थे। इसके चारों कोनों पर बुर्ज व छतरियां बनी हैं।

नाहरगढ़ जैविक उद्यान



जयपुर-दिल्ली राजमार्ग पर जयपुर से लगभग 12 कि.मी. दूर स्थित नाहरगढ़ जैविक उद्यान, नाहरगढ़ अभ्यारण्य का हिस्सा है। यह अरावली पर्वतमाला के अन्तर्गत 720 हैक्टेयर में फैला है। यह स्थान वनस्पतियों और जीवों पर शोध करने के लिए एक उपयुक्त जगह है। नाहरगढ़ जैविक उद्यान में पक्षियों की 285 से अधिक प्रजातियों को देखा जा सकता है। उद्यान की सैर करते हुए रामसागर के समीप विभिन्न प्रकार के पक्षी दिखाई देते हैं। यह एशियाई मोर, बंगाल टाइगर, शेर और चीते, लक्कड़बग्घे, भेड़िये, हिरण, मगरमच्छ, भालू, हिमालयी काले भालू, जंगली सूअर आदि जानवरों का घर है।

नाहरगढ़ किला





नाहरगढ़ किले से जयपुर शहर का विहंगम और अद्भुत नजारा दिखाई देता है। सन् 1734 ई. में महाराजा जयसिंह के शासनकाल के दौरान इस किले का निर्माण किया गया। यह शहर के पहरेदार की भूमिका निभाता है। नाहरगढ़ यानि शेर का किला। इस किले में बनाए गए माधवेन्द्र भवन को ग्रीष्म काल में महाराजा के निवास के रूप में काम में लिया जाता था। इसमें रानियों के लिए आरामदेह बैठक तथा राजा के कक्षों का समूह, आलीशान दरवाजे और खिड़कियां हैं जिन्हें भित्तिचित्रों से सजाया गया है। नाहरगढ़ अतीत की यादों को समेटे शान से खड़ा है। अभी हाल ही में महल में एक स्कल्पचर आर्ट गैलरी भी बनवाई गई है।

सिसोदिया रानी महल और बाग



जयपुर से 8 किलोमीटर की दूरी पर आगरा रोड पर स्थित सिसोदिया रानी महल और बाग मुगल शैली से सजा है। राधा और कृष्ण की लीलाओं के साथ चित्रित इस बहु-स्तरीय उद्यान में फव्वारे, पानी के झरने और चित्रित मंडप हैं। महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने इसे अपनी सिसोदिया रानी के लिए बनाया था।

ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर

पूरे विश्व का एकमात्र ब्रह्मा मंदिर पुष्कर में स्थित है। संगमरमर से निर्मित, चाँदी के सिक्कों से जड़े हुए, लाल शिखर और हंस (ब्रह्मा जी का वाहन) की छवि वाले मंदिर में ब्रह्मा जी की चतुर्मुखी प्रतिमा गर्भगृह में स्थापित है। इसी मंदिर में सूर्य भगवान की संगमरमर की मूर्ति भी है। इस मूर्ति की विशेषता यह है कि सूर्य भगवान की मूर्ति जूते पहने दिखाई दे रही है।

पुष्कर सरोवर



तीर्थराज' के नाम से प्रसिद्ध पुष्कर सरोवर, सभी तीर्थस्थलों का राजा कहलाता है। ऐसी मान्यता है कि इस सरोवर में डुबकी लगाने से तीर्थयात्रा सम्पन्न मानी जाती है। अर्द्ध गोलाकार रूप में लगभग 10 मीटर गहरी यह झील 500 से अधिक मंदिरों और 52 घाटों से घिरी हुई है। राजस्थान आने वाला प्रत्येक देशी व विदेशी पर्यटक, पुष्कर घूमने और ब्रह्मा जी के दर्शन करने जरूर आता है।

झीलों और महलों का शहर, उदयपुर

यह खूबसूरत शहर 'पूर्व के वेनिस' के रूप में जाना जाता है। झीलों का शहर उदयपुर अरावली की हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। पिछोला झील के बीच में स्थित प्रसिद्ध लेक पैलेस उदयपुर के सबसे खूबसूरत स्थलों में से एक है। यहां की जयसमंद झील एशिया की दूसरी सबसे बड़ी मानव निर्मित मीठे पानी की झील है। शानदार सिटी पैलेस और सज्जनगढ़ पे लेस (मानसून पैलेस) शहर की स्थापत्य कला के सुंदरतम उदाहरण हैं। यह शहर जस्ता और संगमरमर की प्रचुरता के लिए भी जाना जाता है। फतेह सागर झील में सौर वेधशाला, द्वीप पर स्थित भारत की एकमात्र वेधशाला है और इसे दक्षिणी कैलिफोर्निया की बिग बीयर झील की तर्ज पर बनाया गया है।

सिटी पैलेस



क्रेनेलेटेड दीवारों से घिरी पहाड़ी पर झील के ऊपर निर्मित सिटी पैलेस आंगनों, मंडपों, छतों, गलियारों, कमरों और हैंगिंग गार्डन का एक समूह है। मुख्य प्रवेश द्वार में तीन धनुषाकार द्वार हैं तथा आठ संगमरमर पोर्टिको के साथ "त्रिपोलिया" है। यहीं पर महाराणाओं को सोने में तोला जाता था, जिसकी बराबर राशि जनता के बीच वितरित की जाती थी। सूरजगोखाड़ा, सूर्य की बालकनी, वह जगह है जहां मेवाड़ के सूर्यवंशी महाराणा मुसीबत के समय लोगों के विश्वास को बहाल करने के लिए स्वयं उनके समक्ष उपस्थित हुए थे। कांच के उत्तम मोर मोज़ाइक के लिए जाना जाने वाला 'मोरचौक' तथा नीले और सफेद सिरेमिक के लिए प्रसिद्ध 'चिनी चित्रशाला' महल के अन्य आकर्षण हैं। हर शाम माणकचौक पर शानदार ध्वनि और प्रकाश शो आयोजित किया जाता है जो मेवाड़ के समृद्ध इतिहास को जीवंत करता है।

लेक पैलेस



इसका निर्माण पिछोला झील में जगमंदिर के पास द्वीप पर सन् 1743 और सन् 1746 के बीच करवाया गया था। काले और सफेद पत्थरों से बनी दीवारें अर्द्ध-कीमती पत्थरों से सजी हैं। उद्यान, फव्वारे, छतें और स्तंभ इसकी शोभा बढ़ाते हैं।

प्रताप गौरव केंद्र



टाइगर हिल्स में 25 बीघा भूमि में फैला प्रताप गौरव केंद्र महाराणा प्रताप और मेवाड़ के इतिहास को समर्पित है। इसका प्रमुख आकर्षण पहाड़ी के ऊपर महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊंची ''बैठी हुई'' मूर्ति है। केंद्र के अन्य मुख्य आकर्षण हल्दीघाटी युद्ध की 3डी प्रस्तुति, देवी-देवताओं की लाइव मैकेनिकल मॉडल प्रदर्शनी, लाइट एंड साउंड शो आदि हैं।

गराडिया महादेव मंदिर, कोटा



गराडिया महादेव मंदिर कोटा का एक प्रसिद्ध मंदिर है, जो चंबल नदी के पास स्थित है। यहां का नजारा सबसे मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्यों में से एक है। मंदिर तक कुछ सीढ़ियां उतरकर पहुंचा जा सकता है। यह स्थान नियमित पर्यटन स्थलों से थोड़ा दूरस्थ और अलग-थलग है। यह स्थान पिकनिक गंतव्य के रूप में काफी लोकप्रिय है। यदि आप शांति, प्रकृति की भव्यता और एकांत की तलाश कर रहे हैं, तो आपको इससे बेहतर जगह नहीं मिलेगी।

बावड़ियों का शहर, बूंदी

बूंदी, कोटा से लगभग 36 किलोमीटर दूर स्थित एक शानदार शहर है। महलों और किलों से घिरे इस शहर की खूबसूरती देखते ही बनती है। बूंदी में अमरूद और आम के बाग हैं तथा यह अरावली रेंज और नदियों से घिरा हुआ है।

बूंदी पर कभी हाड़ा चौहानों का शासन था। कई इतिहासकारों का दावा है कि यह कभी महान हाड़ोती साम्राज्य की राजधानी थी, जो अपनी कला और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध था। हालांकि, सन् 1624 में, कोटा अलग हो गया और एक स्वतंत्र राज्य बन गया और इससे बूंदी के पतन की शुरुआत हुई। बूंदी अभी भी अपनी करिश्माई मध्ययुगीन भव्यता को बरकरार रखता है। जोधपुर और राजपूत की तरह, बूंदी की वास्तुकला में भी नीला रंग है, जिसे जटिल नक्काशीदार कोष्ठक और स्तंभों में तेज गर्मी के दौरान घरों को ठंडा रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

तारागढ़ किला



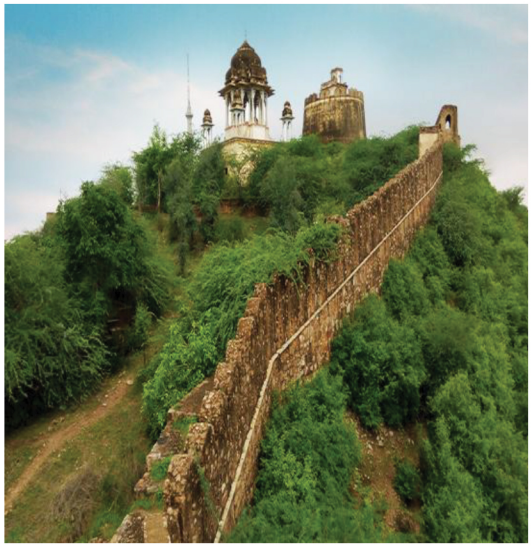

सन् 1354 में निर्मित तारागढ़ किला, बूंदी की सबसे प्रभावशाली संरचनाओं में से एक है। सुकून से टहलने के लिए इसके मैदान बेहतरीन जगह हैं। अपनी घुमावदार छतों, टॉपिंग मंडप, मंदिर के स्तंभों, हाथी और कमल के रूपांकनों की अधिकता के साथ, यह महल राजपूत शैली का प्रतीक है।

चित्तौड़गढ़ किला



चित्तौड़गढ़ किला राजपूत भावना का एक उपयुक्त प्रतीक है। 180 मीटर ऊंची पहाड़ी के ऊपर स्थित और 240 हेक्टेयर में फैला यह राजसी किला साहस और गर्व की कहानियों से ओत-प्रोत है। किंवदंती है कि चित्तौड़गढ़ किले का निर्माण भीम द्वारा शुरू किया गया था, जो भारत

के प्रख्यात पौराणिक महाकाव्य महाभारत के वीर पांडव भाइयों में से एक थे। भव्य संरचना विजय और त्रासदियों के दिनों में वापस ले जाती है और इसकी दीवारें असाधारण पुरुषों और महिलाओं की अविश्वसनीय कहानियों से गूँजती रहती हैं।

माउंट आबू, सिरोही



माउंट आबू राजस्थान के सिरोही ज़िले में स्थित है। यह अरावली पहाड़ियों में स्थित एक हिल स्टेशन है। इसकी सबसे ऊँची चोटी 1,722 मीटर है जिसे गुरु शिखर के नाम से भी जाना जाता है। यहीं एक पौराणिक मंदिर भी है जिसकी ऊंचाई 6 फीट है। अत:, इससे यहां की कुल ऊंचाई 1727 मीटर हो जाती है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार माउंट आबू का बहुत बड़ा धार्मिक महत्व है। ऐसा माना जाता है कि ऋषि वशिष्ठ ने इस स्थान पर महत्वपूर्ण यज्ञ किया था और दिव्य गाय नंदी की रचना की थी।

माउंट आबू में स्थित अचलेश्वर महादेव मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार, मंदिर भगवान शिव के पैर के अंगूठे के निशान के चारों ओर बनाया गया है।

इस प्रकार राजस्थान पर्यटन के विविध अवसर प्रदान करता है, जहां ऐतिहासिक किलों और महलों जैसी सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ मनोरम झीलों जैसी प्राकृतिक सुंदरता का संगम है। यह रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में साहसिक वन्यजीव अन्वेषण से लेकर माउंट आबू और उदयपुर के शांत अनुभवों तक विविध प्रकार की रुचियों को पूरा करता है। राज्य का समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास और यहां के लोगों का आतिथ्य "पधारो म्हारे देश" की टैगलाइन में समाहित पर्यटन और पिकनिक के लिए इसे एक अनूठा और यादगार गंतव्य बनाता है।



सोनू कुमार
आशुलिपिक
(मुख्यालय)

परदेस और पर्व

हम अपने सपनों को संजोए हुए अपने घर से रोटी पानी की तलाश में परदेस जाते हैं। यह गमन हमारे जीवन में जहां एक ओर आर्थिक संपन्नता को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर रिश्तों से दूर भी कर देता है। यह प्रकिया कोई नई नहीं है। हम अक्सर इस भाव को तमाम गीतों, कविताओं और साहित्य के माध्यम से जीते हैं।

अभी जब मैं मगध एक्सप्रेस पर सवार होकर अपने गाँव जमालपुर बिगहा की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा हूं, तो मेरे मन में लोक गायिका शारदा सिन्हा जी का लोकगीत रह-रह कर हुलास ले रहा है कि.....

कहे तोसे सजना, ये तोहरी सजनिया
पग पग लिये जाऊँ, तोहरी बलइयाँ
मगन अपनी धुन में, रहे मोरा सइयां
पग पग लिये जाऊँ, तोहरी बलइयाँ

क्षेत्रीय पर्व लोक की मिठास को जीने का अवसर देते रहते हैं। पिछले 7 साल से मैं दिल्ली में रह रहा हूं और त्योहार ही वह बहाना बनता है जिससे हम अपनी माटी, अपने घर वालों से मिलते हैं तथा एक नई ऊर्जा को महसूस करते हैं। शहर के एकाकी जीवन में पर्व सावन के झोंकों जैसे हैं।

शहरी बाबू के लिए पर्व इतना आसान नहीं है। मसलन रेल की टिकट की व्यवस्था सबसे बड़ी चुनौती है। साथ ही क्षेत्रीय त्योहारों के लिए राष्ट्रीय अवकाश का न होना सरकारी काम को थोड़ा-बहुत बाधित भी करता है क्योंकि इसके लिए अलग से अवकाश लेना पड़ता है। बात यदि छठ पर्व की करें तो इसमें एक दो दिन नहीं एक सप्ताह लग जाता है। इसके अलावा घर जाने से पहले बाजार-हाट भी करना पड़ता है, इसके लिए थोड़े दिन पहले से ही अपनी जेब का हिसाब-किताब भी रखना पड़ता है क्योंकि परदेश से घर जाने पर सब की खुशी में चार चाँद लगे तो मन को तसल्ली मिलती है।

बात छठ पर्व की चली है तो बताते चलें कि छठ पूजा की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। ऐसा माना जाता है कि महाभारत काल में कुंती ने सूर्य देव की उपासना करके कर्ण को प्राप्त किया था। इसके अलावा भगवान राम और माता सीता ने भी अयोध्या वापसी के बाद इस पर्व को मनाया था। यह पूजा सूर्य देव को समर्पित होती है, जो जीवन के आधार हैं।

साथ ही, छठी मइया से संतान की लंबी उम्र, स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि की कामना की जाती है। छठ पूजा **चार दिनों** तक चलने वाला पर्व है और इसमें कठोर नियमों का पालन किया जाता है।

पहला दिन - नहाय खाय का होता है। इस दिन व्रती पवित्र नदी या जलाशय में स्नान करते हैं और शुद्ध सात्विक भोजन करते हैं। यह भोजन केवल एक बार किया जाता है और उसमें लहसुन-प्याज का प्रयोग नहीं होता।

दूसरा दिन - खरना (प्रसाद) का होता है। इस दिन व्रती दिनभर उपवास रखते हैं और शाम को गुड़ और चावल की खीर, रोटी और केले का प्रसाद बनाते हैं। यह प्रसाद बहुत पवित्र होता है और घर के सभी लोग इसे ग्रहण करते हैं।

तीसरा दिन - संध्या अर्घ्य का होता है। इस दिन व्रती और उनके परिवार के सदस्य नदी, तालाब या किसी जलाशय में जाते हैं और डूबते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। पुरूष सिर पर बांस की टोकरी में प्रसाद लेकर घाट के किनारे जाते हैं और महिलाएं सूप में पूजा सामग्री लेकर जल में खड़ी होती हैं तथा व्रत गीत गाते हुए सूर्य की आराधना करती हैं।

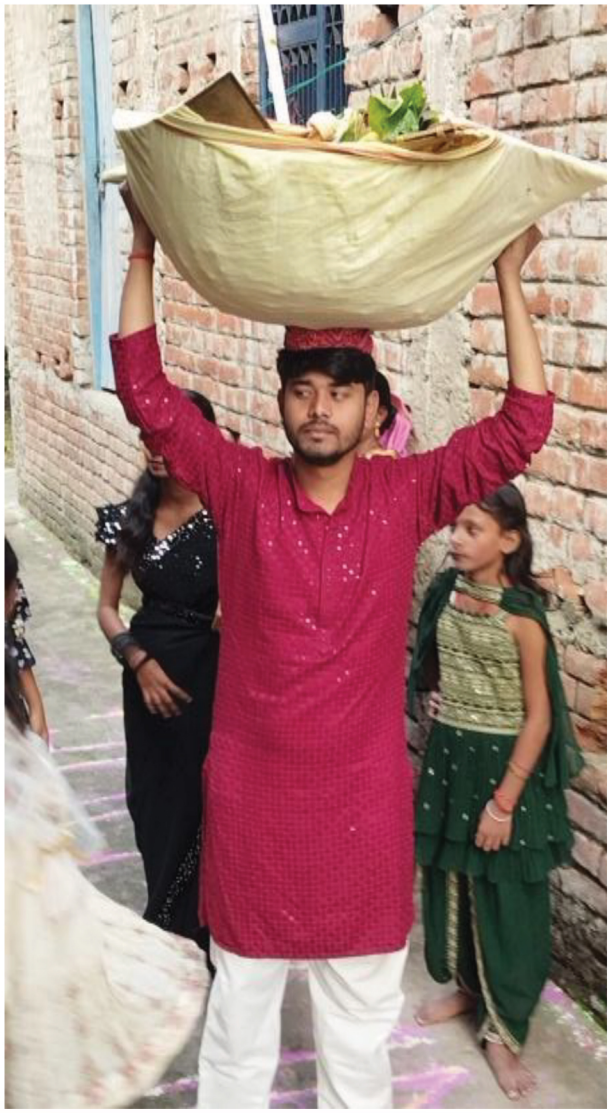

चौथा दिन -ऊषा अर्घ्य का होता है। यह अंतिम दिन होता है जिसमें सुबह जल्दी उठकर व्रती पुनः जलाशय जाते हैं और उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इसके बाद प्रसाद वितरण होता है और कठिन व्रत का समापन होता है।

पूरी छठ पूजा के दौरान लोकप्रिय लोक गायिका शारदा सिन्हा के छठ गीत बजते रहते हैं जिससे पूरे वातावरण में एक मधुर दिव्यता की अनुभूति होती है।

पूजा में शुद्धता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता है। प्रसाद में ठेकुआ, केला, नारियल, गन्ना आदि विशेष रूप से शामिल होते हैं।

उगते सूर्य को अर्घ्य देते समय का शारदा सिन्हा जी का गाया हुआ एक लोकगीत याद आ रहा है कि.....

.....सुनिहा अरज छठी मैया, बढ़े कुल परिवार,
बढ़े कुल परिवार।
घाट सजवली मनोहर, मैया तोरा भगती अपार,
मैया तोरा भगती अपार।
लिहि ए अरग हे मैया, दिहीं आशीष हजार,
दिहीं आशीष हजार।



छठ पूजा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह श्रद्धा, भक्ति और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का उत्सव है। यह पर्व जीवन में संयम, शुद्धता और सामाजिक सहयोग का संदेश देता है। आधुनिक युग में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, और इसकी लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। आज जब दुनिया पर्यावरण संकट और सामाजिक विषमता से जूझ रही है, तब छठ पूजा जैसे पर्व संवेदनशीलता, सामूहिकता और संतुलन का मार्ग दिखाते हैं।

"मेरे लिए, कुछ बनना किसी मुकाम पर पहुँचना या किसी खास लक्ष्य को हासिल करना नहीं है। मैं इसे आगे बढ़ने, विकसित होने का एक ज़रिया, और बेहतर आत्म की ओर निरंतर बढ़ते रहने का एक तरीका मानती हूँ। यह सफ़र कभी खत्म नहीं होता।"

- मिशेल ओबामा



ज्योति गुप्ता
संगरोध निरीक्षक
पशु संगरोध एवं प्रमाणीकरण सेवा, कोलकाता

डिजिटल युग में खोया बचपन

एक गांव में एक परिवार रहा करता था। उसमें एक प्यारी बच्ची भी थी जिसका नाम खुशी था। खुशी के परिवार में उसकी मां, पापा, दादी और दादा थे। खुशी की आंखें हमेशा चमकती रहती थीं। वो हमेशा अपने गांव में घूमा करती थी और गांव के पेड़ों पर चढ़ना, तितलियों के पीछे भागना, नदी किनारे गीली मिट्टी से खिलौने बनाना, दोस्तों के साथ दौड़ना, ये सब ही उसकी दुनिया थी और उसकी हँसी पूरे गांव में गूंजा करती थी।

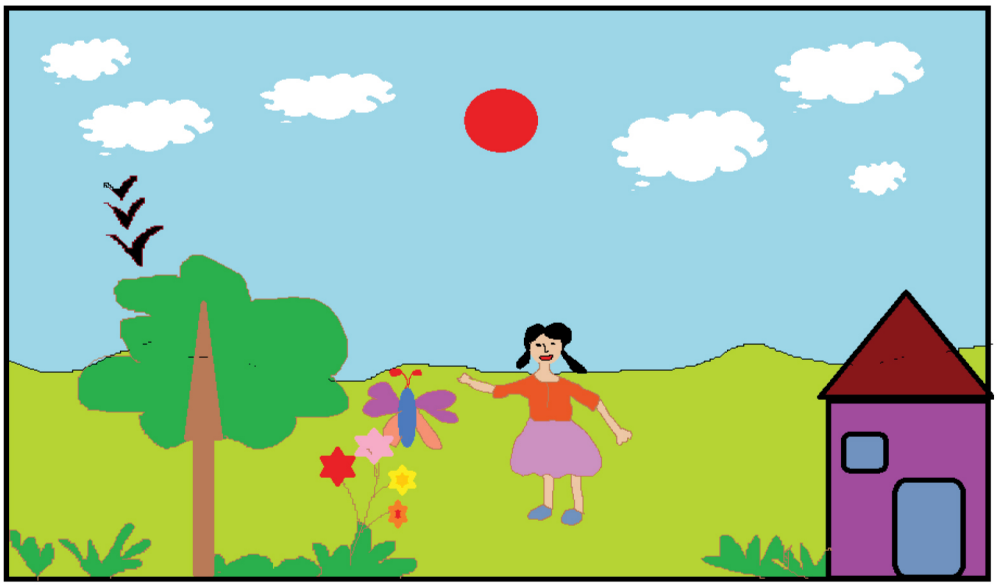

धीरे-धीरे समय बीतता गया और खुशी अब 8 साल की हो गई। इसी बीच गांव में बहुत बदलाव भी आ गए थे। अब हर घर में डिजिटल मोबाइल आ गया था जिसमें पूरी दुनिया समाई थी। अब लोग बाहर निकल कर एक दूसरे से बातचीत करने की बजाए बिस्तर पर लेट कर डिजिटली बातें किया करते थे।

खुशी के घर में भी एक मोबाइल फोन था। अब वो पहले की तरह बाहर जाकर घूमने और खेलने की बजाए मोबाइल में ही पूरा दिन बिता दिया करती थी। जब उसे खेलने का

मन होता तो वो डिजिटल गेम खेलती, जब उसे फूल और तितलियों को देखने का मन करता तो वो मोबाइल पर सर्च करके देख लेती। अपने दोस्तों से भी वो अब डिजिटली बात करती। अब गांव में कोई भी बच्चा खेलता-कूदता नजर नहीं आता था।

ये सब देख कर एक दिन उसकी मां ने खुशी को अपने पास बुलाया और कहा, बेटी तुम अब कहां खो गई हो? अब तुम असली दुनिया से दूर होती जा रही हो। तुम्हें ये डिजिटल दुनिया से बाहर आना चाहिए। इतना समझाने पर भी खुशी की आदतें नहीं बदलीं।

ये सब देख कर मां और दादी ने एक फैसला लिया कि अब वो खुशी को असली खुशी दे कर ही रहेंगे। अब रोज मां और दादी खुशी को सुबह-सुबह बाहर घुमाने ले जाते और उसे बताते कि देखो सूरज कितना सुंदर चमक रहा है। कितनी अच्छी धूप आ रही है, बारिश के छींटे तुम्हारे चेहरे पर कितनी चमक बढ़ा रहे हैं, पौधों को पानी देने का कितना मजा है और इन पौधों से होकर आती हुई हवा कितनी ताजा है। फिर मां ने उसे समझाया कि ये सब कुछ तुम मोबाइल में भी देख रही थी लेकिन क्या ये एहसास तुम्हें महसूस होता था।

ये सब कुछ दिनों तक चलता रहा। फिर खुशी को ये एहसास हुआ कि ये असली दुनिया कितनी प्यारी है और ये मोबाइल सिर्फ एक डिजिटल दुनिया है जिसे जरूरत के हिसाब से उपयोग करना चाहिए, इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। खुशी के इस बदले रूप को गांव वालों ने भी देखा और बहुत कुछ सीखा। अब फिर से पूरा गांव प्रकृति के साथ-साथ आगे बढ़ने लगा।

सीख: हम सब डिजिटल युग में रहते हैं और आगे भी एक से एक नए डिजिटल उपकरणों से हमारा सामना होगा। डिजिटल उपकरणों को हमें अपनी जरूरत के हिसाब से उपयोग करना होगा। हमारे बच्चे इन डिजिटल उपकरणों की लत में ना पड़ें इसके लिए अभिभावकों को बच्चों के साथ समय बिताना होगा और उन्हें प्रकृति से जुड़ाव को लेकर अच्छी जानकारी भी देनी होगी।



डॉ. मनीष कुमार मौर्य,
सहायक आयुक्त
केंद्रीय पशु पंजीकरण योजना,
रोहतक, हरियाणा

वाइल्ड

लंच टाइम था, इसलिए मोबाइल स्क्रॉल करने में लगा था। तभी डॉ. विवेक का फ़ोन आ गया, "बॉस नमस्ते, डी.एफ.ओ. साहब फ़ोन किये थे क्या?"

मैंने जवाब दिया, "नहीं तो, अब क्या नया बवाल कराये हो?"

"एक तेंदुआ मर गया है, पी.एम. करना है" डॉ. विवेक ने बताया। डॉ. विवेक मेरे पुराने साथी थे और पास के ही अस्पताल में पदस्थ थे।

"चलो निमंत्रण पत्र आने दो विभाग से, तभी तो जाया जायेगा" मैंने बताया।



कुछ मिनटों में पत्रकार महोदय लोगों के भी फ़ोन आने लगे, "साहब चीता कैसे मरा?, क्या जहर दिया गया? या फिर शिकार किया गया है? क्या उसकी खाल, दांत गायब है? किसी अंतरराष्ट्रीय गिरोह की करतूत है क्या?" और जाने क्या-क्या।

क्या कीजियेगा, अपने देश में युवाओं ने बेरोजगारी से निपटने के लिए स्वरोजगार/स्टार्ट अप के साथ-साथ पत्रकारिता का भी चयन किया। कोई भी ब्रेकिंग न्यूज़ उनके यू-ट्यूब करियर को आसमान पर पहुंचा सकती है। इसलिए वे कोई भी चांस गवाना नहीं चाहते, भले ही वे बेचारे तेंदुए, चीते, बाघ और शेर के बीच का अंतर न जानते हों।

खैर, सरकारी पत्र वन विभाग की गाड़ी के साथ समय से आ गया। तीन डॉक्टरों की टीम वन विभाग के परिसर में पहुंच गयी थी, जहाँ इस बड़ी जंगली बिल्ली के शव को रखा गया था। वन विभाग के रेंजर साहब हमारे जलपान आदि की व्यवस्था में लगे थे और यही बता रहे थे, "लगता है ठंड लग गयी, डैम के किनारे पड़ा था"।

पता नहीं देश के क़ानून में कोई दोष है या हमारी प्रशासनिक व्यवस्था में, लोग कोई बखेड़ा नहीं पालना चाहते। बस जल्दी से मामला रफा-दफा हो जाये। ऐसे मामलों में जनमानस भी जुड़ने लगता है। लिहाजा घटना स्थल पर भीड़ इकट्ठा होने लगी।

हम लोगों ने अनुरोध किया, "रेंजर साहब स्पॉट पर ले चलिए, अँधेरा होने के बाद पी.एम. नहीं हो पायेगा।"

जंगल के अन्दर तेंदुए को पास से देखना अति दुर्लभ है। इनके शरीर एवं बालों की चमक आकर्षक होती है।

"वाह! कितना सुन्दर है, अद्भुत!" मेरे तीसरे साथी ने कहा जिसे बीच में टोकते हुए डॉ. विवेक बोले, -"कितना नहीं, कितनी, मादा थी बेचारी"।



एक पशु चिकित्सक का कार्य कितना कठिन हो सकता है इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि जहां आदमी का डॉक्टर केवल एक प्रजाति का इलाज करता है वहीं पशु चिकित्सक संसार की 83,999 प्रजातियों की शारीरिक जांच और इलाज करता है और पशु की

की एक प्रजाति में भी कई टाइप हो सकते हैं; मसलन गाय एक प्रजाति है लेकिन साहिवाल और फ्रीजियन में कितना अंतर है। ऐसे ही चिहुआहुआ और ग्रेट डेन एक प्रजाति है लेकिन भयंकर अंतर।

रूटीन प्रोसीजर की शुरूआत एप्रन, और ग्लव्स पहन कर की गयी, डॉ. विवेक ने बिना हाथ लगाये बताया, "इसको फंदा लगा के मारा गया है।" इतना सुनना था कि वन विभाग के अधिकारियों के कान खड़े हो गए। डॉ.. विवेक ने आगे बढ़ कर मेरा हाथ उसके गर्दन और पेट पर पड़ी धारियों पर लगाया, जहाँ के बाल हटाने पर फंदे के निशान दिखाई दे रहे थे।

अब मैंने रेंजर साहब से कहा, "एफ. आई. आर. लिख लीजिये। हो सकता है सैंपल भेजने पड़ें"।

बेचारे वन विभाग के अधिकारी अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त हो गए। इतनी विकट समस्या से कैसे निजात मिले? कहीं हमारे ऊपर ही जांच न बैठ जाये। अब तो रिटायरमेंट के केवल 2 महीने बचे हैं, कहीं पेंशन न रुक जाये। आदि, आदि।

इन्सिज़न लगाने, लंग्स को पानी में डुबाने, ट्रैकिया एक्जामिन करने के अलावा हमने मादा के नाखूनों में पेड़ की छाल और कंजेशन आदि देखकर यह पुष्टि कर ली कि उक्त पशु की हत्या की गयी है और मरने से पहले उसने बहुत संघर्ष किया है। ज्यादा कष्ट उसके यूट्रस में अजन्मे बच्चों को देखकर हुआ।

खैर, पोस्टमार्टम की अन्य प्रक्रियाओं, जिसमें उसकी अंत्येष्टि शामिल थी, को पूरा करने के बाद हम लोग घटना स्थल पर जाने लगे, बातों-बातों में हमने रेंज़र साहब को सही जगह ले चलने को कह दिया। बेचारे साहब ने फीकी सी हँसी से हामी भर दी।

घटना स्थल एक कबड्डी के मैदान जैसा था। घनी झाड़ियों के बीच में दौड़ाने के निशान बने थे, कुछ डंठलों पर खून के निशान थे। एक पतला 15-20 फुट का बेल का पेड़ था, जिसकी छालें देखने से पता चल रहा था कि बेचारे जंगली जानवर ने इस पर चढ़ाई की थी। एक लटकती डाल पर फंदे के निशान मालूम पड़ रहे थे।

अब रेंज़र साहब से हमने सच बताने को कहा। "मरा यहाँ होगा, बाद में गाँव वाले इसे डैम के पास फेक दिए होंगे"। साहब ने बताया। अब तक घटना की जांच करने डी.एफ.ओ. साहब भी आ गए थे। आगे के सवाल उन्होंने पूछे -

किसने देखा था सबसे पहले?
किसको फ़ोन किया गया था?
क्या पहले भी देखा गया था?

वॉचर कौन है यहाँ का?

और उच्च अधिकारी ने पहली गाज गिराते हुए वॉचर साहब को सस्पेंड कर मुख्यालय से अटैच कर दिया।

पहला विकेट गिरा नहीं कि सच बाहर आने लगा। एक-एक कर लोग उच्च अधिकारी के पास सच्चाई बताने आने लगे। "साहब हमने पहले ही रेंज़र साहब से सच-सच बताने को कहा था, बोले किसे पता चलेगा, कौन लफड़े में पड़ेगा? है तो जंगली खूंखार जानवर ही"।

खैर, रात को बड़े साहब ने हम लोगों को डिनर पर आमंत्रित किया। एक महीन राजनीतिज्ञ की भाषा में बड़े साहब ने संतुलित शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने विभाग की छवि को साफ़ कर दिया और हमसे अपेक्षा की कि रिपोर्ट को वज़नदार शब्दों से बचाया जाए 'कैन' के बजाय 'में' का इस्तेमाल किया जाए। सारांश यह था कि "आप स्वयं समझदार हैं, आपको क्या बताना"।

विवेक थोड़ा मुंहफट है, जाते-जाते बोल गया, "साहब हर कलम में रिफिल होती है, उसकी क्षमता पहले से निर्धारित होती है, बाकी हमसे जितना हो पाएगा करेंगे।"

अगले दो-तीन दिन इस विमर्श में बीता कि मौत का सही कारण क्या था? काफी सार्थक तर्क और बहस के बाद ये निष्कर्ष निकला की मादा तेंदुआ पानी की तलाश में बस्ती के करीब आई, जहां जंगली सूकरों को पकड़ने के लिए लगाए गए फंदे में वह फंस गयी, बहुत संघर्ष करने के लिए उसने दौड़ लगाई यहाँ तक की पेड़ पर भी चढ़ी, लेकिन अंततः गर्मी, भूख, और डिहाइड्रेशन के कारण उसी पेड़ पर लटकते हुए मर गयी।

कुछ बारीकियां और थीं जैसे कि फंदा गले, कमर और सीने में भी लगा था और बड़ी बात यह थी कि दम घुटने या गले की हड्डी टूटने से मौत नहीं हुई थी। इसलिए हत्या जानबूझकर नहीं की गयी।

चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई-लिखाई अंग्रेजी में ही होती है। हिंदी भाषी क्षेत्र में टेक्निकल शब्दों को हिंदी में बताना दुष्कर होता है। ये अलग बात है कि अनुवादिनी और कंठस्थ ने हमारा काम आसान कर दिया है। फिर भी एफ.आई.आर. में पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर धाराएँ जोड़ने के लिए भारतीय दंड संहिता और रिपोर्ट में लिखे शब्दों में तालमेल दिखना चाहिए।

प्रशासन ने अपनी शक्ति दिखाई और गाँव से चार लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया। अब असली हडकंप मचा। जब निर्दोष पकड़े जाने लगे तो अपने आप दो लोग गाँव छोड़ के भाग गए और इस तरह मुजरिम की पहचान हो गई। अगले तीन-चार दिन में वे भी

पकड़े गए। सबूतों का अभाव था, जो सोशल मीडिया ने पूरा कर दिया। एक वीडियो वायरल हो रहा था जिसमें उसी बेल के पेड़ पर लटक कर तड़पते हुए बेचारी मादा दिखाई देती थी, बैकग्राउंड में लोगों के डर और एक्साइटमेंट में चिल्लाने की आवाज़ें थी। उस वीडियो को लोगों ने अपने-अपने नजरिए से देखा। हमारा नजरिया यह था कि उसे बचाया जा सकता था।

खैर, कानून ने अपना काम किया और पकडे गए लोगों ने वकील। सभी को न्याय मिलने में काफी वक़्त लगा जैसा कि होता रहा है। एक दिन अंग्रेजी माध्यम के क्लास थ्री में पढ़ने वाली मेरी बेटी ने पूछा "पापा व्हाट इज़ द मीनिंग ऑफ़ वाइल्ड"? उसकी मम्मी ने बताया "जो जंगल में रहते हैं, इन्क्लुडिंग प्लांट्स"। "क्या शहर या गाँव में रहने वाले भी वाइल्ड हो सकते हैं", बेटी ने फिर पूछा।

जवाब हम सब जानते हैं।

बात परफेक्ट होने की नहीं है। बात यह भी नहीं है कि आप आखिर में कहाँ पहुँचते हैं। खुद को जानने और सुनने का मौका देने में, अपनी अनोखी कहानी को अपनाने में, अपनी सच्ची आवाज़ का इस्तेमाल करने में ही शक्ति है।"

- मिशेल ओबामा, "बीकमिंग



हिमांशु अग्रवाल
सहायक अनुभाग अधिकारी

भाषा में गिरता शिष्टाचार

भाषा किसी भी समाज की पहचान होती है। यह केवल संचार का साधन भर नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और मूल्यों दर्पण भी है। जिस समाज की भाषा जितनी मर्यादित और शिष्ट होगी, वह समाज उतना ही सभ्य और अनुशासित माना जायेगा। किन्तु आज के बदलते परिवेश में भाषा का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। आपसी संवाद में अशिष्टता, कटुता और अपमानजनक शब्दों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। यदि भाषा में शालीनता की कमी हो जाए तो रिश्ते टूटते हैं, संवाद विवाद में बदल जाते हैं और वातावरण विषाक्त हो जाता है।

शिष्टाचार वह मर्यादा है जो हमें दूसरों के प्रति आदर, सहनशीलता और सम्मान प्रकट करना सिखाती है। जब यह शिष्टाचार भाषा के साथ व्यक्त किया जाता है तो संवाद सौम्य, सुखद और प्रेरणादायी प्रकट होता है। भाषा का शिष्टाचार व्यक्ति की शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक परिपक्वता को व्यक्त करता है। भाषा में अशिष्टता की प्रवृत्ति न केवल व्यक्तिगत संबंधों को प्रभावित करती है बल्कि समाज में सामूहिक, चेतना पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

भाषा में गिरते शिष्टाचार के कारण:

1. सोशल मीडिया का प्रभाव:- आजकल व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे मंचों पर लोग बिना सोचे समझे प्रतिक्रिया देते हैं। संक्षिप्त और त्वरित उत्तर देने की होड़ में शिष्टाचार की अनदेखी होने लगी है।
2. राजनीतिक कटुता:- राजनीतिक विमर्श में नेताओं का एक दूसरे के प्रति अशिष्ट और अपमानजनक भाषा का प्रयोग सीधा जनता तक पहुँचता है। जिससे सामान्य व्यक्ति भी इसका अनुसरण करने लगता है।

3. शिक्षा और संस्कारों में कमी:- आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों और संस्कारों पर कम ध्यान दिया जा रहा है जिससे बच्चों में संयम और मर्यादा की कमी होने लगी है।
4. भोगवादी संस्कृति:- प्रतिस्पर्धा और आत्मकेन्द्रित जीवनशैली के कारण युवाओं में धैर्य और सहनशीलता की कमी होने लगी है। चिड़चिड़े स्वभाव का सीधा असर भाषा पर पड़ता है।
5. मीडिया और मनोरंजन जगत:- फिल्मों, धारावाहिकों और स्टैंड-अप कॉमेडी जैसे मंचों पर अभद्र भाषा का प्रयोग अक्सर हंसी के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिससे समाज में इसे स्वीकार्यता मिलने लगी है।

भाषा में अशिष्टता के परिणाम

1. सामाजिक संबंधों में गिरावट:- अपमानजनक शब्दों का प्रयोग आपसी संबंधों को बिगाड़ने का सबसे आसान साधन है।
2. हिंसा और तनाव में वृद्धि:- कटु भाषा समाज में हिंसा और आक्रोश को जन्म देती है।
3. संस्कृति पर प्रभाव:- व्यक्ति की भाषा में उसकी शिक्षा और संस्कारों की झलक होती है जब भाषा में शिष्टाचार गिरता है तो संस्कृति कमजोर पड़ने लगती है।
4. नौकरी और कार्यस्थल:- अशालीन भाषा के प्रयोग से कार्यक्षेत्र में टीमवर्क, अनुशासन और पेशेवर वातावरण बिगड़ने लगते हैं।

सुझाव और उपाय

1. मूल्यपूरक शिक्षा का समावेश:- विद्यालयों में नैतिक मूल्यों तथा संस्कारों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
2. माता-पिता और परिवार का चिंतन:- बच्चे सबसे पहले भाषा का प्रयोग परिवार से ही सीखते हैं इसलिए अगर माता-पिता और परिवार में मर्यादित और शिष्ट भाषा का प्रयोग होगा तो बच्चे उसी का अनुसरण करेंगें।
3. मीडिया जगत की सक्रियता:- मीडिया और मनोरंजन जगत को भाषा में संयम रखने को प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. सोशल मीडिया में आत्मसंयम:- सोशल मीडिया के मंचों पर प्रतिक्रिया देने से पहले व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि उसके द्वारा उपयोग में ली गई भाषा किसी को चोट भी पहुंचा सकती है तो किसी के लिए मरहम भी बन सकती है।
5. राजनेता और जनप्रतिनिधियों का प्रभाव:- यदि राजनीतिक विमर्शों में मर्यादित और शालीन भाषा का प्रयोग होगा तो जनता पर उसका सीधा और सकारात्मक असर पड़ेगा।

भाषा सभ्यता की आत्मा होती है। भाषा में यदि शिष्टाचार का ह्रास होगा तो उससे आपसी संबंधों के साथ-साथ, समाज की सामूहिक चेतना पर भी नकारात्मक असर पड़ेगा। भाषा का प्रयोग

करते समय व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके द्वारा उपयोग की गई मीठी वाणी व्यक्तिगत संबंधों को सुधारने के साथ-साथ, समाज में सम्मान और सफलता का अनुसरण करती है इसलिए हमें अपनी भाषा में शिष्टाचार को बढ़ावा देना चाहिए साथ ही, यह भी आवश्यक है कि हम आने वाली पीढ़ी को भी यही संस्कार दें।



लौट आ ओ धार
टूट मत ओ साँझ के पत्थर
हृदय पर
(मैं समय की एक लंबी आह
मौन लंबी आह)
लौट आ; ओ फूल की पंखड़ी
फिर
फूल में लग जा
चूमता है धूल का फूल
कोई, हाय।

-शमशेर बहादुर सिंह (लौट आ, ओ धार)



ज्योति पाण्डेय
कनिष्ठ लिपिक, अजमेर

हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और औपनिवेशिक मानसिकता

प्रस्तावना:- भारतीय सांस्कृतिक विरासत विश्व की प्राचीनतम व गौरवपूर्ण संस्कृतियों में से एक रही है जिसने चिरकाल से संपूर्ण विश्व का मार्ग दर्शन किया है। भारतीय संस्कृति विविधता में एकता के मूल भाव को लेकर सूत्रबद्ध रही है। हमारी संस्कृति केवल बाह्य आवरण जैसे पुरानी इमारतें, मंदिरों आदि तक सीमित नहीं है अपितु वह आंतरिक पर्यवेक्ष में रची-बसी है जैसे हमारी विविध भाषाएं, रंग-रूप, वेशभूषा, खान-पान, नृत्य, सहित्य, गीत-संगीत, कला, शिल्प आदि। भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व को साथ लेकर चलने में केंद्रित है, तभी तो कहा गया है। "वसुधैव कुटुंबकम"

''मतलब संपूर्ण विश्व हमारा परिवार है।''

परंतु दुर्भाग्यवश लंबे औपनिवेशिक शासन काल ने भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति को पूर्णरूपेण चोटिल कर हाशिए पर ला दिया। औपनिवेशिक शासन काल ने हमारे आत्मविश्वास को ऐसा झिंझोड कर रख दिया कि हम भारतीय अपनी संस्कृति को हीन और पाश्चात्य संस्कृति को उत्तम समझने लगे।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत:- भारतीय संस्कृति निम्न ध्येय के साथ संपूर्ण विश्व के कल्याण की ओर केंद्रित है।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः

सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणी पश्यन्तु

मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।"

भारतीय संस्कृति निम्नरूपेण सर्व समृद्ध और सर्व गौरवपूर्ण है।

1. भारत के हर क्षेत्र में विभिन्न बोलियां, भाषाएं, परिधान, आदि है किन्तु भारत फिर भी एक सूत्र में बंधा हुआ है।

2. भारत में अजंता एलोरा की गुफाएं, ताजमहल, खजुराहो के मंदिर जैसे न जाने कितनी वैश्विक धरोहरें स्थापत्य कला को प्रचुर बनाती हैं।

3. भारत में अत्यधिक भाषाओं के साथ अनगिनत श्रेष्ठतम सहित्य संपूर्ण विश्व के लिए ज्ञान का असीम भण्डार हैं।

4. भारत के अनगिनत तीज-त्यौहार उत्तम व्यंजन केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि प्रेम-पूर्ण जीवन का प्रतिबिंब है।

5. भारत के आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति, वैदिक शिक्षा पद्धति, योग, ध्यान आदि विलुप्त होती जीवन का सार हैं।

औपनिवेशिक मानसिकता:- औपनिवेशिक मानसिकता का अर्थ है कि शासित वर्ग द्वारा अपने शासक वर्ग को श्रेष्ठ समझा जाना। भारत लगभग 100 वर्षों तक ब्रिटेन के अंतर्गत पराधीन रहा है जिससे भारतीयों धीरे-धीरे अपने शासक वर्ग के तौर-तरीके, रीति-रिवाज आदि अपने से बेहतर लगने लगे। जिसने मुख्य कारण हैं।-

1. लॉर्ड मैकाले की नवीन शिक्षा पद्धति (1835) - लॉर्ड मैकाले द्वारा यह शिक्षा पद्धति लाई गई ताकि वे भारतीयों में अपनी संस्कृति के प्रति हीन भावना लाकर ब्रिटेन के लिए एक पढ़ा-लिखा किन्तु वफादार वर्ग तैयार कर सकें।

2. फूट डालो और राज करो की नीति- अंग्रेजों ने भारतीयों के सबसे मजबूत बिंदु उनकी एकता को चिटिल किया, इस सामंजस्य को झिंझोड़ कर रख दिया ताकि वे भारत पर शासन कर सकें।

3. अंग्रेजों की दमनकारी नीतियां - अंग्रेजों ने हमारी शिक्षा पद्धति, हमारे त्यौहारों, रीति-रिवाजों को, तौर-तरीकों को गहरा आहत किया ताकि हमारी यह मानसिकता हो जाए कि वे हमसे श्रेष्ठ हैं और उनके लिए शासन करना आसान हो।

इस कारण से भारतीय संस्कृति समृद्ध होते हुए भी कमतर व पिछड़ी समझी जाने लगी।

वर्तमान पर्यवेक्ष:- स्वतंत्रता के बाद सरकार ने, बुद्धिजीवियों ने कई प्रयास किए कि अपनी संस्कृति को पुनर्जीवित किया जा सके। जैसे कुटीर उद्योग, हस्त-शिल्प को बढ़ावा देना, अपनी मातृभाषा से प्रेम करना आदि किन्तु यह औपनिवेशिक मानसिकता भारतीयों के मन में ऐसी रच-बस गई है कि उससे इतनी जल्दी छुटकारा पाना मुश्किल है।

अग्रिम कार्यवाही:- समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ बनाने की बनाने की आवश्यकता है। उसके लिए निम्न कार्य किए जा सकते हैं।

1. शिक्षा पद्धति में समग्र शिक्षा - योग, ध्यान, पौराणिक कला, नृत्य, सहित्य, सांस्कृतिक संगीत इत्यादि को शामिल करना।
2. बच्चों को बालपन से ही अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, तीज-त्यौहार, वेशभूषा आदि के लिए गौरव महसूस करना सिखाना होगा।
3. हमें अपने त्यौहारों, रीति-रिवाजों आदि को अपने जीवन का हिस्सा बनना।
4. अपने कुटीर उद्योगों व हस्त शिल्पों को बढ़ावा देना तथा स्वदेशी को अपनाना।
5. स्कूलों में बच्चों को अपनी राजभाषा व मातृभाषा भी सिखाना।

उप - संहार:- अपनी समृद्ध संस्कृति को सम्मान देना उसको बढ़ावा देना का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं कि हम स्वयं को सौ वर्ष पीछे धकेल दें। बल्कि तात्पर्य यह कि स्वयं को औपनिवेशिक मानसिकता से स्वतंत्र करना और अपनी संस्कृति को उचित सम्मान देना। इसके साथ ही आधुनिकता को भी सप्रेम अपनाना - क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

तो समझने योग्य बात यह कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को छोड़े बिना, उसको उपयुक्त सम्मान देते हुए आधुनिकता को अपनाना होगा तभी हमारा समग्र विकास मुमकिन है।

"मैं अपने पोते के तोतले प्रश्न के उत्तर में कि 'तुम का कल्लै हो'
इतिहास की कभी न साफ़ हो सकने वाली स्याह पड़ती स्लेट पर
उम्मीद की एक नई वर्णमाला लिखना चाहता हूँ
जिसमें संसार के सभी बच्चे, अपनी इबारत बिना हिचक और डर के लिख सकें"

-अशोक वाजपेयी



शीला बाई मीणा
आशुलिपिक
(मुख्यालय)

कामकाजी औरतें

उठती हैं हड़बड़ाते हुए, कितनी देर हुई आज, इसका हिसाब लगाती हैं,
नहीं है वक़्त उनके पास अंगड़ाई लेने का बिस्तर पर,
उठ खड़ी होती हैं सीधा पलकों के हल्का सा खुलते ही
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।

रात को की थी तैयारी सुबह की
फिर भी न जाने कैसे सुबह सब ऐसे लगता है
सब समेटने की चाहत में अपना कुछ टूटता लगता है
भागती हैं हर रोज वो कि कहीं देर न हो जाये,
औरत नहीं संभाल सकती काम, ये सुनने को नहीं मिल जाये
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।

बच्चों को स्कूल छोड़ने का सुख उसने कभी न पाया है,
लाख तकलीफें सह कर भी होंठो पर मुस्कान की छाया है
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।

हर काम समय पर कर दिखाती हैं, ऑफिस में कभी जी ना चुराती हैं
फिर भी साबित करने को काबिलियत मौके ना पूरे वो पाती हैं,
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।

शाम होते ही याद आता है उसे घर क्या-क्या ले जाना है,
बॉस का मीटिंग का बुलावा उसके कदम थाम लेता है
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।

घर में सब उनके इन्तजार में हैं, वो फंसी यहाँ काम में हैं;
जल्दी से पहुंचना वो चाहती हैं, हाथ में सामान की लिस्ट थमी है, पहुंचते ही आंगन में वो सबके काम संभालती हैं,
चाय की भी फुर्सत नहीं उन्हें, पर हर रिश्ता वो संभालती हैं
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।

अपना नाम बनाने की चाहत में रोज खुद को थोड़ा भूल जाती हैं,
सबकी पसंद का खाना सजा है टेबल पर
वो कल की तैयारी में जुट जाती हैं
कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं साहब, कामकाजी औरतें आराम कहां कर पाती हैं।



पंकज कुमार सिंह
अनुभाग अधिकारी
(मुख्यालय)

दरिंदगी की शिकार एक लड़की का माँ के नाम भावुक संदेश

माँ, बहुत दर्द देकर, बहुत दर्द सहकर,
मैं जा रही हूँ, तुमसे कुछ कहकर।

आज मेरी विदाई में जब,
सखियाँ मुझसे मिलने आएंगी,
सफेद जोड़े में मुझे लिपटा देख,
सिसक- सिसक मर जाएंगी।

लड़की होने का खुद पे,
फिर से अफसोस जताएंगी,
माँ, तुम उनसे इतना कह देना,
दरिंदों की इस दुनिया में जरा संभल कर रहना।

माँ, राखी पर भैया की कलाई,
जब सूनी रह जाएगी,
याद मुझे कर-कर जब आंखें उनकी भर आएंगी,
माँ, तुम भैया को समझाना, उनको रोने ना देना।

माँ, पापा भी छुप-छुप कर बहुत रोएंगे,
कुछ ना कर पाया, यह कह कर खुद को बहुत कोसेंगे,
माँ, तुम उन्हें ये इल्जाम अपने सिर लेने ना देना,
दर्द उन्हें कोई होने ना देना।

माँ, तेरे लिए अब क्या कहूँ,
दर्द को तेरे, शब्दों में कैसे बांधूँ,
फिर से जीने का मौका, तुझसे कैसे मांगूँ।
माँ, लोग तुझे बहुत सताएंगे,
मुझे आजादी देने का इल्जाम तुझपे लगाएंगे,
माँ, तुम ये सब सह लेना, पर ये हरगिज ना कहना,
कि अगले जनम मुझे बिटिया ना देना।

मैं देख रहा हूँ
झरी फूल से पँखुरी
-मैं देख रहा हूँ अपने को ही झरते।
मैं चुप हूँ :
वह मेरे भीतर वसंत गाता है।

-अज्ञेय



बसंत
सहायक प्रशासन अधिकारी
डी.एम.एस.

सीख

षट्पद घुमत कुसुम पर
उसका मन ललचाए
नीर दौड़त तौर पर
उससे रहा ना जाए
अनल जलाए लाकड़ी
क्यों वह उसे भड़काए
नभ में यूं ही क्यों ये
विहग उड़ते जाए
हिमगीरी बना अंलकार
क्यों भारत मुकुट कहलाए
सीख सरिता से कुछ तू
क्यों वह आगे बढ़ती जाए
पंतग उड़ती आकाश में
सोच वह क्या दर्शाए
खड़े रहो न्याय में हमेशा
धरा पर पांव टिकाए।



तुषार उपलावदिया
आशुलिपिक
केंद्रीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र, सुनाबेड़ा, ओडिशा

माँ तो माँ है

लिखता हूँ मैं आँसू बहते, बहती जिनमें करूणा है,
नील गगन से भी ऊँची, जिन माओं की महिमा है।

दिल पर पत्थर रख कर जिनने, अश्रुओं की धारा से,
जाते देखे अपने बच्चे, जिनको तुमने मारा है।

मारा तुमने बचपन उनका, छीनी उनकी आज़ादी,
जो सड़क किनारे रो रही है, वो ही उनकी माता थी।

माता कहने को तो यूँ, सारा दुख सह लेती है,
खाना सारा बच्चों को दे, वो खुद भूखी रह लेती है।

पर जब बच्चे के हाड़ मांस वो, पड़े सड़क पर पाती है,
सच बोलूं उस माँ की ममता फूट-फूट कर गाती है।

गाती है वो गीत भयावह, जिनमें श्रापों के गुच्छे हैं,
जो कुचल गए उनके बच्चे, वो व्यक्ति कितने टुच्चे हैं।

जो अपनी मस्ती में झूम-झूम कर, वाहन तेज चलाते हैं,
जानी अंजानी राहों पर, जो उथल-पुथल हो जाते हैं।

तुम अपना नहीं तो कम से कम, उन बच्चों का तो ध्यान करो,
जिन माओं ने पाला उनको, तुम उनका तो सम्मान करो।

उस माँ के बहते आँसू, करते हैं बस यही पुकार,
चीख-चीख कर कहते हैं वो, वाहन धीरे चलाओ यार, वाहन धीरे चलाओ यार.....।।

बिटिया की पापा से प्रार्थना



अमित कुमार
स्टॉकमैन कनिष्ठ श्रेणी
केंद्रीय पशु पंजीकरण योजना रोहतक, हरियाणा

सौभाग्य से मिलती बेटी, कोख में न मारना पापा

माँ को समझाना, दादी बाबा को बतलाना पापा।

मैं आऊंगी घर का सारा काम कराऊंगी पापा

आप का खाना, दादी की दवा, माँ को प्यार करूंगी पापा।

जब सांझ थक कर तुम घर आओगे,

गले लग, हो खुश, आपकी थकान मिटाऊंगी पापा।

आप के कर्जे के लिए कमाऊंगी पापा,

आपकी मुसीबत में बेटी से बेटा बन जाऊंगी पापा।

कुल की मर्यादा ये रहेगा मेरा अटल इरादा,

आपकी इज्जत का मान रखूंगी पापा।

बस एक बार दुनिया में आ जाने दो पापा,

बस एक बार बेटी को कर्तव्य निभाने दो पापा।

कोख में मुझे न मारना पापा,

मैं जानती हूं पापा, क्यों समाज नहीं चाहता बेटी।

सोचता है समाज, शादी में खर्चा ज्यादा आएगा,

आप ज्यादा कमा नहीं पाते हो, दहेज कैसे दे पाओगे पापा।

इसमें मेरी कोई न गलती, ये समाज ने ठाना है,

पापा हम सबको मिलकर, दहेज दानव को हराना है।

यदि नहीं रहेगा दानव दहेज, फिर बेटियां न मारी जाएंगी,

हो हर्षित, उल्लसित दो-दो घर को महकाएंगी।

मेरी बात का मान रखना पापा, मेरे प्यारे पापा।

कोख में न मारना पापा, कोख में न मारना पापा।

शक्ति दो, बल दो, हे पिता
जब दुख के भार से मन थकने आए

पैरों में कुली की-सी लपकती चाल छटपटाए
इतना सौजन्य दो कि दूसरों के बक्स-बिस्तर घर तक पहुँचा आएँ

कोट की पीठ मैली न हो, ऐसी दो व्यथा—
शक्ति दो।

और यह नहीं दो तो यही कहो,
अपने पुत्रों मेरे छोटे भाइयों के लिए यही कहो—

कैसे तुमने अपनी पीढ़ी में किया होगा क्या उपाय?
कैसे सहा होगा, पिता, कैसे तुम बचे होगे?

तुमसे मिला है जो विक्षत जीवन का हमें दाय
उसे क्या करें?

तुमने जो दी है अनाहत जिजीविषा
उसे क्या करें?

कहो, अपने पुत्रों मेरे छोटे भाइयों के लिए यही कहो।

-रघुवीर सहाय (शक्ति दो)

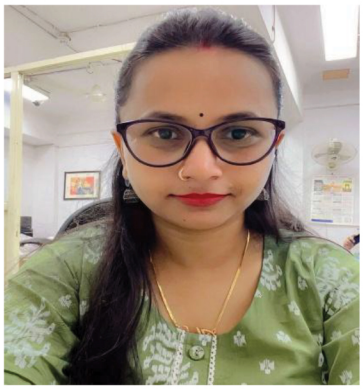

मधु बाला
निजी सहायक
(मुख्यालय)

गणतंत्र दिवस 2025 के अवसर पर विभाग द्वारा आमंत्रित अतिथियों के साथ बातचीत

वर्ष 2025 के गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर, पशुपालन और डेयरी विभाग ने राष्ट्रीय गोकुल मिशन के लाभार्थियों को समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। दूर-दराज के इलाकों में किसानों के द्वार पर अपनी सेवा देने वाले मैत्री को भी इस अवसर पर आमंत्रित किया गया। आगंतुकों के आगमन से राष्ट्रीय गोकुल मिशन के जमीनी स्तर पर व्याप्त प्रभाव प्रकाश में आए। अतिथियों ने अपना परिचय देने के क्रम में बताया कि कैसे पशुपालन और डेयरी विभाग की पहलें इस क्षेत्र को सुदृढ़ता प्रदान कर रहीं हैं तथा कैसे पशुपालक समुदाय विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं से अपनी आजीविका प्राप्त कर रहे हैं। इस दौरान पशुपालन और डेयरी विभाग की टीम ने आए हुए अतिथियों से वार्तालाप भी किया। अतिथियों से वार्तालाप के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।



सर्वप्रथम बिहार से आने वाले सुमन कुमार शाह जी से बातचीत हुई। आइए पढ़ते हैं सुमन जी की कहानी, उनकी जुबानी -

''नमस्कार, मेरा नाम सुमन कुमार शाह है। मैं बिहार राज्य के आररिया जिले के परगवां प्रखंड के अगवा पटटी ग्राम का निवासी हूँ। मैं आरजीएम लाभाथी हूं तथा मैंने वर्ष 2017 में कॉमफेड पटना से राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत प्रशिक्षण प्राप्त किया। मैंने गांव में किसानों के द्वार पर जाकर कृत्रिम गर्भाधान किया जिससे किसानों के यहां अच्छी नस्ल के गोपशु तैयार हुए। मुझे सेक्स सॉर्टेड सीमन भी मिला जिससे किसान के यहां बाछी (बछड़ी) ही तैयार हुई। इससे किसान की आय में बढ़ोतरी हुई, दूध में बढ़ोतरी हुई, किसान खुश रहने लगे और मेरी भी गांव में जान-पहचान बढ़ी जिससे मैं बहुत संतुष्ट हूं। वर्ष 2023 में मुझे राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कारों में प्रथम स्थान मिला। इसके लिए मैं भारत सरकार एवं पशुपालन और डेयरी विभाग को धन्यवाद



देना चाहूंगा, जिन्होंने मुझे वर्ष 2025 के गणतंत्र दिवस परेड में सम्मिलित होने का अवसर दिया। जय हिंद जय भारत!"

बिहार, औरंगाबाद से आने वाले कुंदन तिवारी कहते हैं, मैं राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना का लाभार्थी हूं। मैं जब से इस मिशन का हिस्सा बना, तब से पशुओं की उत्पादकता में काफी सुधार देखा है। मैं भारत सरकार एवं पशुपालन और डेयरी विभाग को धन्यवाद देना चाहता हूं कि हमारे किसानों के लिए मुफ़्त सीमन की व्यवस्था हुई। ऐसे सेक्स सार्टेड सीमन से किसानों को



बेहतर लाभ मिल रहा है, जिससे बछिया ही जन्म लेती है। मैं इस वर्ष होने वाली 26 जनवरी की परेड में हमें भाग लेने का अवसर देने के लिए विभाग को आभार व्यक्त करता हूँ। जय हिंद जय भारत!

तारिक महमूद, जो संघ राज्य क्षेत्र जम्मू-कश्मीर से हैं, बताते हैं "3 साल से मैं पशुपालन विभाग में मैत्री का काम कर रहा हूं। मैं पशुपालन और डेयरी विभाग का शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने 26 जनवरी को मुझे यहां आने का मौका दिया। साथ ही मैं भारत सरकार का भी शुक्रगुजार हूँ कि हमें परेड देखने का मौका दिया।"



डोडा, जम्मू-कश्मीर से आने वाले बादिल ठाकुर ने बताया, "मैं आरजीएम का लाभार्थी हूं। मुझे मैत्री का काम करते हुए 2 साल हो चुके हैं। मैं पशुपालन और डेयरी विभाग को बहुत धन्यवाद देता हूँ और आभार प्रकट करता हूं, जिन्होंने मुझे 26 जनवरी की परेड में शामिल होने का मौका दिया।"



केरल के वायनाड जिले से आने वाले जोसेफ के. कहते हैं, "मैं पिछले 32 साल से एआई तकनीशियन हूँ। मैंने गाय के लगभग 1 लाख 10 हजार कृत्रिम गर्भाधान किए जिससे 50 हजार बछड़े-बछड़ियों का जन्म हुआ। मेरे सेवाकाल के शुरुआती वर्षों में गाय का दूध उत्पादन प्रतिदिन

लगभग 10 लीटर था जो अब बढ़कर 25 लीटर हो गया है। यह उन्नति पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा किए गए प्रयासों का प्रतिफल है। इस उत्तम प्रयास और गणतंत्र दिवस पर आमंत्रित करने के लिए मैं विभाग का आभारी हूँ। धन्यवाद!"

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,

जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।

हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ

पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।

हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती

दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए

पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।
और एक देश का भाप

दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

-रामधारी सिंह दिनकर (भगवान के डाकिए)



बलवीर गैना
सहायक पंजीकार
केंद्रीय पशु पंजीकरण योजना,
अजमेर

जुझारू गोपालक महंत श्री बक्सी राम जी से एक बातचीत

भारत की मिट्टी में जब किसान का पसीना मिलता है, तभी सोना उगता है। पर क्या आप जानते हैं कि खेती के साथ-साथ पशुपालन भी गाँव की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है? गाँव के हर आँगन में बंधी गाय-भैंसें, सुबह-शाम की गूंजती घंटियों की आवाज़ और ताज़ा दूध, घी और दही-छाछ की खुशबू–यही तो है हमारी ग्रामीण जीवनशैली की असली तस्वीर। आज के तकनीकी युग में पशुपालन सिर्फ पारंपरिक आचरण नहीं रहा, बल्कि यह एक ऐसा व्यवसाय बन गया है जो परिवार को संबल देता है, युवाओं को रोज़गार देता है, देश को पोषण देता है और देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जहाँ एक समय लोग इसे मामूली काम समझते थे, वहीं अब यही काम कई पशुपालकों को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर मान-सम्मान एवं पुरस्कार दिला रहा है। ऐसे ही एक गुरुकुल से निकले जुझारू पशुपालक हैं- महंत श्री बक्शी रामजी, दादूद्वारा आश्रम, सुरसुरा,अजमेर, राजस्थान से, जिन्होंने गौमाता की सेवा को ही अपना धर्म और कर्म बना लिया है। गौ माता की देसी नस्ल (गिर) की गायों का वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन और डेयरी फार्मिंग कर उन्होने इससे दुग्ध व दुग्ध उत्पादों का अच्छा उत्पादन किया है, आस-पास के लोगों को इसके विषय में जागृत किया है, पशुपालन हेतु प्रेरित किया है व आस-पास के गांवों में गिर नस्ल सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।



साक्षात्कार

महंत श्री बक्शी राम जी से वार्तालाप के दौरान उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति में गाय को माता माना जाता है और सर्वाधिक पूजनीय स्थान दिया जाता है, उसके पीछे ठोस कारण है। इस विषय में क्रियात्मक रूप से उनका गहन अनुभव रहा है। उनके गुरु एवं माता-पिता भी गौपालन से जुड़े हुए थे और गौ माता की सेवा की प्रेरणा उन्हें अपने माता-पिता व गुरु से ही मिली। पूर्व में वे अपने आश्रम व गौशाला में गायों की सेवा परंपरागत तरीके से ही किया करते थे। किन्तु केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के संपर्क मे आने के बाद गायों की वंशावली के रिकार्ड रखने के विषय मे जानकारी व प्रेरणा मिली, इससे भारतीय गौवंश (गिर गाय) का औसत दुग्ध उत्पादन बढ़ा, गिर नस्ल के गुणों मे सुधार हुआ, दुग्ध व दुग्ध उत्पादों का अच्छा उत्पादन किया जाने लगा। इससे आश्रम व आश्रम मे रहने वाले जन-मानस को अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ।



महंत श्री बक्शी रामजी से बातचीत के कुछ अंश निम्नानुसार हैं।-

1. आप कब से पशुपालन कर रहे हैं व आपको गौ सेवा की प्रेरणा कहाँ से मिली?

➢ मैं बालपन से ही गौपालन कर गौमाता की सेवा कर रहा हूँ। मेरे माता-पिता व गुरु भी गौपालन से जुड़े हुए थे और गौ माता की सेवा की प्रेरणा मुझे अपने गुरु व माता-पिता से ही मिली। गौवर्ती होने के कारण मेरा गहन अनुभव रहा है कि गौमाता की शारीरिक व मानसिक संरचना पशु जगत के अन्य प्राणियों से कुछ भिन्न है। गौमाता की आँखों में अपने चरवाहों/ ग्वाल के प्रति प्रेम झलकता है,

➢ अपने पालक की गोद में सिर व कंधे पर अपना गला रख कर वे अपना प्रेम व्यक्त करती हैं। यही सब मुझे उनकी सेवा करने हेतु और प्रेरित करते हैं।

2. वर्तमान मे आपके पास कितने पशु हैं व किस नस्ल के हैं?

➢ वर्तमान में मेरे पास गिर नस्ल की कुल 60 गौमाता हैं।

3.आपने गिर नस्ल की गायों का ही पालन क्यू किया?

➢ गिर नस्ल की गायों के दुग्ध उत्पादन की उनकी उच्च क्षमता, उच्च गुणवत्ता व रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, गिर गायों का गोबर, गौमूत्र, खुर तरंग इत्यादि भूमि संरक्षण, संतुलन एवं भूमि की उर्वरता शक्ति को बढ़ाते हैं। गिर नस्ल की गायें विभिन्न जलवायु के लिए अनुकूल होती हैं और गर्म स्थानों पर भी आसानी से रह सकती हैं इसलिए मैं गिर नस्ल की गायों का पालन कर रहा हूँ।

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्। त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानधे ॥

अर्थातः तुम (गाय) सभी देवताओं की माता हो, तुम यज्ञ का कारण हो, तुम सभी तीर्थों का तीर्थ हो, हे पवित्र गाय, तुम्हें सदा नमस्कार है।

4.आप पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार, की केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के संपर्क में कब आए व केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना के बारे मे आप की क्या राय है?

➢ मैं वर्ष 1997 से केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, भारत सरकार, पशुपालन और डेयरी विभाग, अजमेर के संपर्क में हूँ व सरकार की विभिन्न सेवाओं का लाभ उठा रहा हूँ। केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के संपर्क में आने के पश्चात हमें पशु वंशावली एवं दुग्ध उत्पादन रिकार्ड रखने मे सहायता मिली। पशु पालक प्रचार एवं शिविर के माध्यम से पशु प्रजनन, प्रबन्धन एवं संतुलित आहार के बारे में जानकारी मिली। इससे हमें बेहतर तरीके से गौमाता की सेवा करने का अवसर मिला व साथ ही गौमाता का औसत दुग्ध उत्पादन भी बढ़ा, जिससे आश्रम को अत्यधिक लाभ हुआ एवं उसे आत्म निर्भर बनाने में भी सहयोग मिला।

5. क्या केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के माध्यम से दुग्ध उत्पादन रिकार्ड रखने से पशुओं के आर्थिक विकास संभव हुआ?

➢ जी हां, केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर से पशु वंशावली एवं दुग्ध उत्पादन रिकार्ड रखने की जानकारी मिली जिससे विशेष रूप से गिर नस्ल के पशुओं की दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि हुई, गिर नस्ल के गुणों में सुधार हुआ, शुष्कता अवधि कम हुई, पहली बार बछिया के जन्म की उम्र भी कम हुई, पंजीकृत पशु एवं उसकी संतति के विक्रय से हमें मनचाहा मूल्य व प्रसिद्धि मिली जिससे दैनिक निर्णयों में सहायता मिली। विशेष रूप से पंजीकृत गिर नस्ल के बछड़ों से भी आय प्राप्त होने लगी। आस-पास की गौशाला में गैर वर्णनात्मक (non descript animals) पशुओं में भी सुधार हुआ ।

6.पंजीकृत गिर नस्ल एवं उसकी संतति से किस प्रकार से आय में बढ़ोत्तरी हुई ?

- केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के संपर्क मे आने से पहले मेरे पास उच्च गुणवत्ता वाली गिर गायों का उत्पादन रिकॉर्ड नहीं था इसलिए गिर गाय व उसकी संतति का विक्रय कठिन होता था। यदि विक्रय होता भी तो उसकी सही कीमत नहीं मिलती थी। परंतु केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले नस्ल के पशुओं के दुग्ध अभिलेखन द्वारा पंजीकरण करने से बछड़ों एवं बछड़ियों की मांग भी आने लगी एवं अधिक दाम व प्रसिद्धि भी मिलने लगी।

7. वर्तमान में आपके आश्रम में लगभग कितना दुग्ध उत्पादन हो जाता है?

- वर्तमान में मेरे फार्म में प्रतिदिन लगभग 60 लीटर दुग्ध उत्पादन किया जा रहा है।

8. आपके द्वारा गिर नस्ल के दुग्ध का क्या उपयोग किया जा रहा है?

- गाय का दूध, दही, घी व छाछ आश्रम मे रहने वाले बच्चों व गौ माता की सेवा करने वाले लोगों को पिलाया जाता है। बचे दूध की डेयरी में आपूर्ति की जा रही है जिससे मुझे गिर नस्ल के दूध का सही मूल्य मिल रहा है व उपभोक्ताओं को शुद्ध दूध मिल रहा है।

9.क्या अच्छी नस्ल की गिर गाय के पालन हेतु पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार द्वारा कभी प्रोत्साहन दिया गया ?

- जी हाँ। मुझे भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र से नवाजा जा चुका है।

10. भविष्य में आपकी इस फार्म से संबन्धित और क्या योजनाएँ हैं?

- भविष्य में मेरा यह प्रयास रहेगा कि मेरे फार्म पर देसी नस्लों का विस्तार हो, आस-पास के पशुपालकों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण केंद्र हो, गिर नस्ल के दुग्ध उत्पादन को बढ़ाना तथा गौमूत्र व देसी घी से आयुर्वेदिक दवाइयों का निर्माण करना ताकि आम जनता का स्वास्थ्य सुधारा जा सके।



11. गिर नस्ल की गौमाता पालन में आप का क्या अनुभव रहा है?

प्राचीन काल से ही भारत में गौमाता का सामाजिक महत्व प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जाता रहा है। धन-दौलत के विषय में गोधन को सर्वोत्तम धन माना जाता रहा है। मेरा निजी अनुभव रहा है कि गोपालन और गोवर्धन होने के कारण ही मुझे और हमारे आश्रम को समाज में यह सम्मान प्राप्त है क्योंकि गौ माता धार्मिक महत्व के साथ-साथ आर्थिक संबल प्रदान करती है।

गौ माता का आर्थिक महत्व सर्वविदित है। गौ माता का दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र ये सब उत्तम और परम उपयोगी हैं।
आज मेरे आश्रम के सुचारू रूप से संचालन और आश्रम की परिसंपत्तियों को उन्नत बनाने में गौ माता का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरूँ, प्रेमी मिलै न कोइ।
प्रेमी कूँ प्रेमी मिलै तब, सब विष अमृत होइ॥

जिस मरनै थै जग डरै, सो मेरे आनंद।
कब मरिहूँ कब देखिहूँ, पूरन परमानंद॥

-संत कबीर



सुरेश कुमार बिजारणिया,
क. अनु. अधिकारी
(मुख्यालय)

जीरा (राजस्थानी लोकगीत) – काव्यानुवाद

यह राजस्थानी लोकगीत, जीरे की खेती करने वाली महिला किसान के दर्द को बयां करता है। राजस्थान के कुछ हिस्सों में जीरे की खेती होती है। जीरे की खेती काफी नाजुक मानी जाती है। बेमौसम हल्की सी बारिश से जीरा खराब हो जाता है। माना जाता है कि पीले कपड़ों की छांव पड़ने से भी जीरा खराब हो जाता है। तो महिला किसान अपने पति से अर्ज कर रही है कि जीरे की खेती मत करिए, ये मेरे जीवन का दुश्मन है।

जीरा

	अनुवाद -
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो	**मत बोओ मेरे परनिया (पति) जीरे को**
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो	**मत बोओ मेरे परनिया जीरे को**
यो जीरो जीव रो बैरी रे	**ये जीरा जीवन का बैरी है**
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो	**मत बोओ मेरे परनिया जीरे को**
पाडत कर पीरा पगला रे गया	**सिंचाई कर-करके मेरे पैर थक गए**
म्हारा पडला घस गिया चांदी रा	**मेरी चांदी की पायल घिस गई**
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो	**मत बोओ मेरे परनिया जीरे को**
यो जीरो जीव रो बैरी रे	**ये जीरा जीवन का बैरी है**
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो	**मत बोओ मेरे परनिया जीरे को**
पीलो ओढ़ पीयरे चाली	**पीली चुनड़ी ओढ़ कर पीहर चली**

म्हारो जीरो पड़ गयो पीलो रे
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो
यो जीरो जीव रो बैरी रे
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो
काजल घाल महेल मे चाली
म्हारो जीरो पड़ गयो कालो रे
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो
यो जीरो जीव रो बैरी रे
मत बाओ म्हारा परण्या जीरो

हमारा जीरा पड़ गया पीला रे
मत बोओ मेरे परनिया जीरे को
ये जीरा जीवन का बैरी है
मत बोओ मेरे परनिया जीरे को

काजल डालकर महल में चल दी
हमारा जीरा पड़ गया काला रे
मत बोओ मेरे परनिया जीरे को
ये जीरा जीवन का बैरी है
मत बोओ मेरे परनिया जीरे को

"किसी देश की महानता उसके प्रेम और त्याग के अमर आदर्शों में निहित होती है जो उस जाति की माताओं को प्रेरित करते हैं।"

-सरोजिनी नायडू



वर्तिका राय,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(मुख्यालय)

हे त्रिपुरारी (भोजपुरी कविता) – काव्यानुवाद

यह लोक गीत भिखारी ठाकुर के लिखे गीत द्रौपदी-पुकार से है-

अब पत राखऽ गोबरधनधारी, दुसमन खींचत चीर हमारी
छत्री-बंस बिधंस हो गइलन, सभा में कलपति नारी ॥
ससुर, भसुर, पति, देवर जाउत, सब बइठल मन मारी ॥
पैर में पीर सरीर दुखित बा, मासिक करम लचारी॥
दुःसासन दुरदसा बनावत, दुरजोधन ललकारी॥
सब अपना सपना हो गइलन, नाहक जाल पसारी ॥
धरती हमें पताल खिला दऽ, आपन करेजा फारी।।
कहत भिखारी हमारी माफ कर, सब अवगुन त्रिपुरारी॥
दया के सागर परम उजागर, अधम से लेहु उबारी॥

हे त्रिपुरारी!, गोबर्धनधारी, अब तो आकर थाम लो,
शत्रु खींचता चीर हमारा, रक्षा का कोई नाम लो।
वंश मिटा, सिंहासन टूटा, सभा में आँसू बहते हैं,
नारी की यह दुर्दशा देखो, सब अपने ही बैठे हैं।
ससुर, पति, देवर सब मौन, आँखें नीची किए हुए,
कोई न बोले, कोई न टोके, सब हैं गूंगे बने हुए।
तन पीड़ा में, मन व्याकुल है, मासिक धरम की लाचारी है,
भीतर-भीतर जलती हूँ मैं, सब हंसते कि अबला नारी है ?
दुःशासन बन बैठा उद्दंड, दुर्योधन ने की दीन दशा,
सभा हँसे, करे उपहास – न्याय हुआ निष्प्रभ सभा।
अधिकार सब स्वप्न बने हैं, धर्म बंधा जंजाल में,
मां धरती अब फट जाओ,ले चलो मुझे पाताल में ।
हे त्रिपुरारी, त्रिनेत्रधारी, अब तो मेरा उद्धार करो,
कहत भिखारी, अपराधिन हूँ, सब अवगुण मेरे क्षमा करो।
दया के सागर, करुणा-निधि, मेरी लाज बचा लो

तुम,
इस अधोगति से अब मुझको, फिर से ऊर्ध्व दिशा दो तुम।



यह सच है :—
तुमने जो दिया दान दान वह,

हिंदी के हित का अभिमान वह,
जनता का जन-ताका ज्ञान वह,

सच्चा कल्याण वह अथच है—
यह सच है!

बार बार हार हार मैं गया,
खोजा जो हार क्षार में नया, —

उड़ी धूल, तन सारा भर गया,
नहीं फूल, जीवन अविकच है—

यह सच है!

-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (सच है)



स्वाति मेल्टी
उप निदेशक (रा.भा.)
(मुख्यालय)

झन दिया बौज्यू छाना बिलौरी'- काव्यानुवाद

उत्तराखंड की संस्कृति में वहां के लोक गीतों का बहुत ही महत्व है। वहां के कठिन परिवेश की समस्याओं और महिलाओं की पीड़ा को लोकगीतों का विषय बनाया गया है।

ऐसा ही एक गीत है "झन दिया बौज्यू....." जो लोक-पीड़ा से उपजा अमरगीत है। लोगों में छाना-बिलौरी की धुन इतनी लोकप्रिय हुई कि इसे कुमाऊं रेजिमेंट ने अपनी बैंड धुन में शामिल किया।

कुमाऊंनी लोकगीत - "झन दिया बौज्यू छाना बिलौरी'

झन दिया बौज्यू छाना बिलौरी,
लागला बिलौरी का घामा
हाथै कि दाथुली हाथै में रौली
चूलै कि रोटी चूलै में रौली
हाथै कि कुटली हाथै में रौली
हाथ क मुशल हाथ में रौली
फूल जैसी म्यर मुखड़ी
चेली मैं तुमरी भली-भली
झन दिया बौज्यू छाना बिलौरी
लागला बिलौरी का घामा

ओ रे बाबुल, ओ रे बाबुल
मुझे मत ब्याहना कहीं दूर
मुझे मत ब्याहना उस गांव में
जो है बहुत सुदूर
छाना-बिलौरी, दोनों में होती है बड़ी धूप
कैसे करूँगी काम वहां पर
थक कर, हो जाऊंगी चूर
ओ रे बाबुल, ओ रे बाबुल
मुझे मत ब्याहना कहीं दूर
मेरे हाथ की दराती, कुछ काम न आएगी
मुझसे, चूल्हे में रोटी बन न पाएगी
ये कुदाल तो बस रखा रह जाएगा
मेरे हाथ का मूसल, पीस न पाएगा

ओ रे बाबुल, ओ रे बाबुल
मुझे मत ब्याहना कहीं दूर
मेरा फूल सा चेहरा कुम्हला जाएगा
आंखों का पानी रूक नहीं पाएगा।
अच्छी सी प्यारी सी बेटी को अपनी
मत करना नज़रों से दूर
ओ रे बाबुल, ओ रे बाबुल
मुझे मत ब्याहना सुदूर

- छाना-बिलौरी- गांव के नाम

सिहरा तन, क्षण-भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,

फूटी स्मिति सीता-ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व-विजय-भावना हृदय में आई भर,

-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (राम की शक्ति-पूजा)



श्री राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(मुख्यालय)

अवधी लोकगीत- काव्यानुवाद

दहेज प्रथा हमारे समय की बहुचर्चित समस्या है। यह विसंगति कोई नई नहीं है वरन सदियों से चली आ रही है। हमारा अतीत हमें समस्या के सूत्रों की पहचान कराता है तथा वर्तमान उस समस्या के समाधान की ओर प्रेरित करता है। अतीत को देखने के लिए हम अपने साहित्य को भी खंगालते हैं। ऐसे साहित्य में लोक साहित्य का विशेष स्थान है क्योंकि इसमें व्यक्त भाव बहुत ही सहज और नैसर्गिक होते हैं। दहेज की समस्या के एक संदर्भ का यहां उल्लेख करना समीचीन होगा जिसका सूत्र अवधी लोक गीत में मिलता है। जिसके हिंदी अनुवाद का प्रयास किया गया है।

इस लोक गीत में **पुत्री के विवाह के लिये पिता के द्वारा वर खोजने** का दृष्टांत है जिसमें **अधिक दहेज माँगने के कारण** पिता को **वर खोजने में कठिनता** का सामना करना पड़ता है।

मूल पाठ (अवधी में)	**अनुवाद (हिंदी में)**
हेरेउ[i] कासी हेरेउ बनारस, हेरेज देस सरुवार[ii];	**काशी देख डाली, बनारस ढूंढ डाला**
तोहइ जोगे बेटी सुघर[iii] वर नाहीं,	**चहुँ ओर घूम डाला**
अब बेटी रहउँ कुआँरि ॥1॥	**न पाया ढ़ग का कुमार ॥1॥**
चारि परग[iv] बाबा नगर अजोधिया,	**है अयोध्या बाबुल ज्यादा आसान**
दुई वर राजकुँआर ॥2॥	**जहां दो वर, जिनकी निराली है शान ॥2॥**
ओनही[v] तिलक चढ़ाया मोर बाबा,	**वहीं मेरा तिलक चढ़ाना मेरे बाबुल**
तब मोर रचेआ विआह ॥3॥	**उन्ही से करवाना मेरा विवाह मृदुल ॥3॥**
ओ वर मांगइ बेटी नउ लख दायज[vi],	**वो वर मांगे बिटिया दहेज नौ लाख**
हयिनी दुआरि कइ चार ॥4॥	**हथिनी मांगे द्वार पर तरेर के आंख ॥4॥**
सोने क कलसा मँडये गड़वावइ,	**सोने का कलश ले मंडप की रस्म पर**
तब करइं धरम विआह ।।5।।	**तब करे ब्याह लूट के जश्न पर ।।5।।**
जेकरे बपइआ के अतना दयज नाहीं,	**जिस बाबुल के पास इतना दहेज नहीं**
बर हेरइं अनपढ़ -गँवार ।।6।।	**उसका दमाद भी उतना अंग्रेज नहीं ।।6।।**
	अब तो वर ऐसा ही हिस्से आए

गउआ चरावइं मुख मुरली बजांवइं,
उगहि[vii] बिआरी[viii] खाँइ ।।7।।

मांग के खाए, गाय चराए, पिपिहरी बजाए ।।7।।

---

[i] खोजा
[ii] सरयूपार
[iii] सुंदर
[iv] पग
[v] उनको ही
[vi] दहेज
[vii] मांग कर
[viii] भिक्षा

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष, भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह ।

नीचे जल था ऊपर हिम था,
एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन ।

-जयशंकर प्रसाद (कामायनी: चिंता सर्ग भाग-1)

पशुपालन और डेयरी विभाग ने विशेष अभियान 4.0 सफलतापूर्वक संपन्न किया, लोक शिकायतों के निवारण के लिए निर्धारित लक्ष्यों को शत-प्रतिशत पूरा किया

प्रविष्टि तिथि: 05 नवंबर 2024 शाम 6:47 बजे पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने सार्वजनिक शिकायतों का समाधान करने, स्वच्छता अभियान आयोजित करने, रिकॉर्ड प्रबंधन आदि के उद्देश्य से 2 से 31 अक्टूबर, 2024 के बीच आयोजित "विशेष अभियान 4.0" को प्रमुख मापदंडों पर निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करते हुए सफलतापूर्वक संपन्न किया है।





इस अभियान का नेतृत्व केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी (एफएएचडी) मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने एफएएचडी राज्य मंत्री प्रोफेसर एसपी बघेल के साथ किया। सुश्री अलका उपाध्याय, सचिव (डीएएचडी) ने विभाग और उसके क्षेत्रीय संगठनों द्वारा विशेष अभियान 4.0 की प्रगति का नेतृत्व किया। इन संगठनों ने समर्पित रूप से भाग लेकर इसे सफलतापूर्वक पूरा किया, मुख्य रूप से स्वच्छता के संस्थागतकरण और कार्यालयों में लंबित मामलों को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया।



पशुपालन और डेयरी विभाग में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह तथा विभाग की गृह पत्रिका 'सुरभि' का विमोचन

प्रविष्टि तिथि : 13 नवंबर 2024 रात 9:25 बजे पीआईबी दिल्ली द्वारा

पशुपालन और डेयरी विभाग में दिनांक 13 नवंबर, 2024 को हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने के लिए राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। माननीय राज्य मंत्री प्रो. एस. पी. सिंह बघेल ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध एवं काव्य पाठ तथा अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सचिव (एएचडी) ने की। इसमें संयुक्त सचिव (रा.भा.), निदेशक (रा.भा.) एवं अन्य उच्चाधिकारियों की सहभागिता रही। कार्यक्रम में विभाग के कार्मिकों ने भी भाग लिया। अधीनस्थ कार्यालयों को भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से इसमें जोड़ा गया।



विजेताओं के साथ माननीय मंत्री जी



'सुरभि' पत्रिका का विमोचन

माननीय राज्य मंत्री द्वारा विभाग की राजभाषा पत्रिका 'सुरभि' के द्वितीय अंक का विमोचन भी किया गया। अपने संबोधन में माननीय राज्य मंत्री जी ने अपनी मातृभाषा और उसके महत्व पर रोशनी डालते हुए उससे जुड़े कई रोचक प्रसंगों का उल्लेख किया। उन्होंने हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी बोली, अपनी वेश-भूषा तथा अपने खान-पान को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यही हमारी असली पहचान है। अंत में उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों/ कर्मचारियों को ज्यादा से ज्यादा सरकारी कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया।

केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2024 पर भारत की अर्थव्यवस्था में डेयरी क्षेत्र के योगदान की सराहना की, भारत को दूध निर्यातक बनाने का लक्ष्यः श्री राजीव रंजन सिंह

प्रविष्टि तिथि: 26 नवंबर 2024 रात 9:12 बजे पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने आज नई दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2024 मनाया। इस कार्यक्रम में भारत में श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज कुरियन की 103वीं जयंती मनाई गई। उनकी विरासत का सम्मान करने के लिए नीति निर्माताओं, किसानों और उद्योग जगत के नेता एक मंच पर जुटे थे। कार्यक्रम में केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी और पंचायती राज मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में तथा राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल व श्री जॉर्ज कुरियन सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता विश्व औसत से अधिक है; असंगठित को संगठित डेयरी क्षेत्र में लाने की आवश्यकताः श्री राजीव रंजन सिंह महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियां ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के उत्थान में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। इस कार्यक्रम में देश भर से पशुधन और डेयरी क्षेत्र से जुड़े लोगों ने भाग लिया। समारोह के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल और श्री जॉर्ज कुरियन के साथ मिलकर तीन श्रेणियों में विजेताओं को राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार प्रदान किए। ये पुरस्कार हैं : स्वदेशी गाय/भैंस की नस्लों का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ डेयरी किसान, सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और सर्वश्रेष्ठ डेयरी सहकारी समिति (डीसीएस)/ दूध उत्पादक कंपनी/ डेयरी किसान उत्पादक संगठन। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विजेताओं को प्रत्येक श्रेणी में नए शुरू किए गए विशेष पुरस्कार भी दिए गए।




MANUAL
SURABHI CHAYAN SHRANKHLA
National
Milk Day


Department of Animal Husbandry and Dairying



भारत में ऊँटनी दूध मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने को लेकर बीकानेर में अंतर्राष्ट्रीय कैमेलिड वर्ष के हिस्से के रूप में एक हितधारक कार्यशाला आयोजित की गयी

रेगिस्तान के नायकों से लेकर न्यूट्रास्युटिकल सुपरफूड तक- भारत का लक्ष्य ऊँटों का संरक्षण करना और ऊँटनी दूध उद्योग की संभावित क्षमताओ को सामने लाना है

प्रविष्टि तिथि: 21 दिसंबर 2024 1:23 अपराह्न पीआईबी दिल्ली द्वारा

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2024 को अंतर्राष्ट्रीय कैमेलिड वर्ष घोषित किया है। मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) तथा आईसीएआर-राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र के सहयोग से शुक्रवार, 20 दिसंबर 2024 को राजस्थान के बीकानेर में 'भारत में ऊँटनी दूध मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने' को लेकर एक दिवसीय हितधारक कार्यशाला का आयोजन किया।



इस कार्यशाला का उद्देश्य गैर-गोजातीय (ऊँट) डेयरी मूल्य श्रृंखला के सतत विकास में योगदान देने वाली चुनौतियों को सुलझाने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करना और उसे आसान बनाना था, जिसमें इसके पोषक और चिकित्सीय मूल्य शामिल हैं। इस कार्यशाला में राजस्थान और गुजरात के ऊँट पालकों, सरकारी अधिकारियों, सामाजिक उद्यमों, वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों के साथ-साथ राष्ट्रीय वर्षा आधारित क्षेत्र प्राधिकरण, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, सरहद डेयरी-कच्छ, लोटस डेयरी और अमूल के 150 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने भारत में गैर-गोजातीय दूध क्षेत्र, विशेष रूप से ऊँटनी दूध उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करने और मूल्य-श्रृंखला में सभी हितधारकों को शामिल करके ऊँट पालकों के विकास के लिए स्थायी समाधान का पता लगाने हेतु विचार-विमर्श किया।





इस कार्यशाला में अमूल के प्रबंध निदेशक श्री जयन मेहता (वर्चुअली शामिल हुए), गुजरात के पशुपालन विभाग की निदेशक डॉ. फल्गुनी ठाकर, एनआरसीसी के निदेशक डॉ. आरके सावल, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रो वाइस चांसलर और कच्छ मिल्क यूनियन के अध्यक्ष एवं जीसीएमएमएफ, गुजरात के कुलपति श्री वलुमजी भाई हंबले सहित अन्य लोग शामिल हुए। इस कार्यक्रम में सीमा सुरक्षा बल के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया, जिसके पास एक ऊंट कोर है, जो सीमा पर गश्त और अन्य सेवाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय द्वारा 500 विशेष अतिथियों के साथ सम्मान और संवाद सत्र आयोजित किया गया

प्रविष्टि तिथि: 26 जनवरी 2025 8:03 अपराह्न पीआईबी दिल्ली द्वारा

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने, करीब 500 किसानों को उनके परिवार के साथ एक विशेष इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया, जो राष्ट्रीय गोकुल मिशन और प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना जैसी केंद्र सरकार की योजनाओं के लाभार्थी हैं। इन विशेष अतिथियों को आज राष्ट्रीय राजधानी में मंत्रालय द्वारा आयोजित एक संवाद सत्र में सम्मानित किया गया। **इस अवसर पर केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री (एमओएफएएच एंड डी) और पंचायती राज मंत्री (एमओपीआर) श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह के साथ-साथ एमओएफएएच एंड डी और एमओपीआर राज्य मंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल और एमओएफएएच एंड डी और अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री जॉर्ज कुरियन तथा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।**

कार्यक्रम के दौरान मछुआरों में श्रीमती बबीता राजेश, उत्तराखंड, श्री दिगबिजॉय दास भौमिक, त्रिपुरा और श्रीमती संगिनी सीताराम घायल, महाराष्ट्र और पशुधन किसान श्री वी. जोसेफ, केरल, तारिक अहमद खान (एआई तकनीशियन), कश्मीर और सुमन कुमार साह, बिहार से शामिल थे। इस अवसर पर इन सभी को केंद्रीय मंत्री और राज्य मंत्रियों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला, जिसमें उन्होंने सत्र के दौरान अपने व्यक्तिगत अनुभव, चुनौतियों और आकांक्षाओं को साझा किया। इसके अलावा कार्यक्रम के दौरान मछुआरों में बिहार से श्री चन्द्रशेखर प्रसाद, केरल से श्रीमती फातिमा सुहारा, उत्तर प्रदेश से श्री रजनीश कुमार, लद्दाख से श्रीमती फातिमा बानो और असम से श्री धुरुबज्योति ब्रह्मा को मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वहीं जम्मू से पशुपालक लोकेश कुमार, तमिलनाडु से श्रीमती ग्रुवम्मल, बिहार से कुंदन तिवारी, केरल के बायजू ईवी और तमिलनाडु के राकेश कुमार को भी कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में **केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह** ने देश के विकास में किसानों और मछुआरों के अमूल्य योगदान की सराहना की और उनके समर्पण और कड़ी मेहनत की प्रशंसा की। उन्होंने खेती और मत्स्य पालन समुदायों के कल्याण के लिए सरकार की अटूट प्रतिबद्धता दोहराई और ग्रामीण आजीविका के उत्थान और पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्र में सतत्

विकास सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय द्वारा की गई प्रमुख पहलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने लाभार्थियों को निरंतर समर्थन और विकास के अवसरों का आश्वासन दिया।

राज्य मंत्री (एफएएचडी) प्रो. एसपी सिंह बघेल ने कहा कि किसान और मछुआरे भारत में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों को आकार देने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। जबकि **राज्य मंत्री (एफएएचडी) श्री जॉर्ज कुरियन** ने लाभार्थियों की उल्लेखनीय उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए, उन्हें अपने संबंधित क्षेत्रों में बेहतर प्रयास जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) की सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय ने पशुधन और डेयरी क्षेत्र में विभिन्न सरकारी पहलों के तहत हुई प्रगति के बारे में जानकारी देते हुए कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने उत्पादकता बढ़ाने और किसानों को सशक्त बनाने में नवाचार और सहयोग के महत्व को भी रेखांकित किया। **मत्स्य पालन विभाग (डीओएफ) के सचिव डॉ. अभिलक्ष लिखी** ने मत्स्य पालन क्षेत्र की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मत्स्य पालन की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने इस क्षेत्र में विभिन्न सरकारी पहलों के तहत हासिल की गई उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला।

सुश्री वर्षा जोशी, अपर सचिव, डीएएचडी, श्री सागर मेहरा, संयुक्त सचिव, डीओएफ के साथ-साथ मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे।






संवाद सत्र
Interactive Session

76वें गणतंत्र दिवस परेड में "भारत की स्वदेशी मवेशी नस्लों को सतत ग्रामीण विकास के प्रतीक के रूप में सम्मान" थीम वाली झांकी की सराहना की गई

पशुपालन और डेयरी विभाग की पहली बार झांकी के प्रदर्शन में गूंजा "गऊ मैया तुझे प्रणाम..."

प्रविष्टि तिथि: 26 जनवरी 2025 9:20 अपराह्न पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) की झांकी नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर 76वें गणतंत्र दिवस परेड के दौरान प्रदर्शित की गई। झांकी का विषय था "भारत की स्वदेशी मवेशी नस्लों को सतत ग्रामीण विकास के प्रतीक के रूप में सम्मान" जो वर्ष 2025 की थीम "स्वर्णिम भारतः विरासत और विकास" से मेल खाता है। इस झांकी की भागीदारी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्ष 2019 में मंत्रालय गठन के बाद से पहली बार गणतंत्र दिवस परेड में प्रदर्शित की गई।

यह झांकी भारत की संस्कृति के साथ-साथ इसकी अर्थव्यवस्था के लिए स्वदेशी गोवंश की निरंतर और महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाती है। समृद्ध कलात्मक विरासत से लेकर श्वेत क्रांति 2.0 के अंतर्गत डेयरी किसानों के लिए अधिक समृद्धि लाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता, झांकी द्वारा देश में पशुधन क्षेत्र के योगदान को दर्शाती है।

पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) की झांकी के सामने वाले हिस्से में दूध से भरा एक बड़ा डिब्बा दिखाया गया, जो विश्व में सबसे ज़्यादा दूध उत्पादन करने वाले देश के रूप में भारत की स्थिति को दर्शाता है। वर्ष 2023-24 के दौरान प्रति व्यक्ति 471 ग्राम प्रतिदिन की उपलब्धता के साथ, भारत (वैश्विक औसत 329 ग्राम प्रतिदिन है) कहीं आगे निकल जाएगा, जो वैश्विक पोषण में इसके महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है।



झांकी के पिछले हिस्से में एक विशालकाय कामधेनु को दिखाया गया है, जो भारतीय समाज में देशी गायों के महत्व का प्रतीक है। झांकी में पंढरपुरी भैंस को प्रमुखता से दिखाया गया है। यह भारत में मवेशी नस्लों की समृद्धि का प्रतीक है। उन नस्लों के आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व पर भी इस झांकी में ध्यान केंद्रित किया गया।

झांकी में ग्रामीण समुदायों, विशेषकर महिलाओं के योगदान को भी प्रदर्शित किया गया, जो डेयरी फार्मिंग और सहकारी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिलाएं परिवारों को सशक्त बनाती हैं और स्थायी आजीविका को बढ़ावा देती हैं।



झांकी में डिजिटल नवाचार को दर्शाया गया है जो किसानों को वास्तविक समय में पशुधन प्रबंधन सहायता प्रदान करता है जैसे कि "भारत पशुधन" ऐप, पारंपरिक घी मथना, खुरपका और मुँहपका रोग (एफएमडी) के खिलाफ सार्वभौमिक टीकाकरण अभियान ताकि एफएमडी मुक्त भारत को प्राप्त किया जा सके। झांकी में घी ट्रेसेबिलिटी को प्रमुखता से दर्शाया गया है, जिसमें भारत पशुधन लाइव डेटाबेस दिखाया गया है, जो घी जैसे डेयरी उत्पादों की संपूर्ण एंड-टू-एंड ट्रैकिंग सुनिश्चित करता है। यह पहल किसान उपज का मूल्य बढ़ाती है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता में उपभोक्ताओं का विश्वास बढ़ता है।

झांकी के साथ, भारत के विभिन्न राज्यों से आए पुरुष और महिला बाइकर्स दूध के परिवहन के लिए अभिनव बायो-सीएनजी मोटरसाइकिलों पर सवार दिखाई दिए। झांकी में दूध देने वाली मशीनों से सुसज्जित 'मिल्को-बाइक' भी दिखाया गया है जो सीधे पशुओं से दूध एकत्र करती हैं और उसे संग्रह केंद्रों या उपभोक्ताओं तक पहुंचाती हैं।



झांकी के दो दृश्य-श्रव्य पैनल में भारत की देशी नस्लों और उन्नत पशुधन प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया गया, जिसमें पशुधन क्षेत्र के अभिनव और सतत भविष्य के निर्माण के लिए तेजी से कदम उठाते हुए जीवंत सांस्कृतिक विरासत के प्रति पशुपालन और डेयरी विभाग के समर्पण को दर्शाया गया। पृष्ठभूमि गीत "गौ मैया तुझे प्रणाम...." जो पूजनीय गौ-माता को समर्पित है, ने भारत के मवेशियों की आबादी के गहन महत्व पर प्रकाश डाला।

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै॥

-घनानंद

केंद्रीय राज्य मंत्री एस.पी. सिंह बघेल और श्री जॉर्ज कुरियन ने पशु कल्याण और संरक्षण के लिए "प्राणी मित्र" और "जीव दया" पुरस्कार प्रदान किए

पशु कल्याण कानूनों और नीतियों को मजबूत बनाने के लिए चार प्रमुख पुस्तिकाएं जारी की गईं

पशुधन जनगणना भारत में पशु कल्याण नीति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी: एस.पी. सिंह बघेल

प्रविष्टि तिथि: 27 फरवरी 2025 8:37 अपराह्न पीआईबी दिल्ली द्वारा

पशुपालन और डेयरी विभाग के एक सांविधिक निकाय भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड (एडब्ल्यूबीआई) ने "प्राणी मित्र और जीव दया पुरस्कार समारोह" का 27 फरवरी 2025 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजन किया। पशुओं को अनावश्यक दर्द या पीड़ा न हो यह सुनिश्चित करने के लिए एडब्ल्यूबीआई की स्थापना पशु क्रूरता निवारण (पीसीए) अधिनियम 1960 के अंतर्गत की गई है। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के राज्य मंत्री एस.पी. सिंह बघेल और श्री जॉर्ज कुरियन भी शामिल हुए। पशुपालन विभाग की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय, पशुपालन आयुक्त और एडब्ल्यूबीआई के अध्यक्ष डॉ. अभिजीत मित्रा सहित मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और राज्य सरकारों के प्रतिनिधि भी इस अवसर पर उपस्थित थे।




प्राणी मित्र एवं
जीव दया पुरस्कार
वितरण समारोह


प्राणी मित्र एवं
वितरण समारोह

केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने नई दिल्ली में डेयरी क्षेत्र में सस्टेनेबिलिटी और सर्कुलेरिटी पर कार्यशाला का उद्घाटन किया

एनडीडीबी और 15 राज्यों के 26 दुग्ध संघों के बीच बायोगैस संयंत्रों और डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए

डेयरी क्षेत्र को हरित बनाने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए; एनडीडीबी सस्टेन प्लस परियोजना का शुभारंभ किया गया

प्रविष्टि तिथि: 03 मार्च 2025 शाम 7:08 बजे पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के तहत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने **3 मार्च 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली** में डेयरी क्षेत्र में स्थिरता और परिपत्रता पर कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। केंद्रीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री **श्री अमित शाह** ने आज केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी और पंचायती राज मंत्री **श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह** की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यशाला का उद्घाटन किया। केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के राज्य मंत्री **प्रो. एसपी सिंह बघेल और श्री जॉर्ज कुरियन** भी इस अवसर पर उपस्थित थे। डेयरी क्षेत्र के प्रमुख हितधारकों के साथ-साथ पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी), पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (एमओपीएनजी), नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई), उर्वरक विभाग, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी), इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) और विभिन्न दूध सहकारी समितियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला ने तकनीकी, वित्तीय और कार्यान्वयन सहायता का लाभ उठाकर **डेयरी क्षेत्र में सतत और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए एनडीडीबी और नाबार्ड के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर** के साथ स्थिरता और परिपत्रता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मील के पत्थर चिह्नित किए। देश भर में बायोगैस संयंत्र स्थापित **करने के लिए एनडीडीबी ने 15 राज्यों के 26 दूध संघों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।** इस अवसर पर, **डेयरी क्षेत्र में स्थिरता के उद्देश्य से व्यापक दिशानिर्देश** (यहां क्लिक करें) **जारी किए गए,** साथ ही **एनडीडीबी (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड) के लघु पैमाने पर बायोगैस, बड़े पैमाने पर बायोगैस/संपीड़ित**

बायोगैस परियोजनाओं (यहां क्लिक करें) और टिकाऊ डेयरी हस्तक्षेपों के वित्तपोषण के लिए एनडीडीबी सस्टेन प्लस परियोजना (यहां क्लिक करें) के तहत वित्तपोषण पहलों का शुभारंभ किया गया। इन पहलों से डेयरी फार्मिंग में चक्रीय प्रथाओं को अपनाने में तेजी आने, कुशल खाद प्रबंधन और ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा मिलने तथा पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की उम्मीद है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला ने नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं और विशेषज्ञों की स्थिरता बढ़ाने, कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा छोटे और सीमांत डेयरी किसानों के लिए वित्तीय व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए रणनीति पर चर्चा करने और विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है।







अपने संबोधन में केंद्रीय मंत्री **श्री अमित शाह** ने कहा कि आज जब हम श्वेत क्रांति 2.0 की ओर बढ़ रहे हैं, तो स्थिरता और चक्रीयता का महत्व और भी बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि पहली श्वेत क्रांति की मदद से हमने अब तक जो हासिल किया है, उसके अलावा डेयरी क्षेत्र में स्थिरता और चक्रीयता को अभी पूरी तरह हासिल किया जाना बाकी है। श्री अमित शाह ने कहा कि भारत की कृषि व्यवस्था छोटे किसानों पर आधारित है और गाँवों से शहरों की ओर उनका पलायन उनकी समृद्धि से जुड़ा है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण पलायन की समस्या पर काबू पाने के साथ-साथ छोटे किसानों को समृद्ध बनाने के लिए डेयरी एक महत्वपूर्ण विकल्प है।



केंद्रीय मंत्री **श्री राजीव रंजन सिंह** ने कहा कि डेयरी क्षेत्र में चक्रीयता और स्थिरता पर ध्यान देने के साथ, ईंधन के उत्पादन के लिए गाय के गोबर का उपयोग किसानों की आय बढ़ाने में मदद करेगा। श्री सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि देश में 53 करोड़ से अधिक के विशाल पशुधन संसाधन में से लगभग 30 करोड़ गाय और भैंस हैं। उन्होंने कहा कि इसलिए बड़ी मात्रा में गाय का गोबर उपलब्ध है जिसका उपयोग जैविक खाद, जैव ईंधन आदि के लिए किया जा सकता है, जिससे उत्पादकता बढ़ेगी। केंद्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह को धन्यवाद देते हुए **श्री राजीव रंजन सिंह** ने कहा कि सरकार के समर्पित प्रयासों के कारण डेयरी क्षेत्र काफी हद तक असंगठित से संगठित क्षेत्र में बदल गया है। उन्होंने देश में हरित विकास और किसान कल्याण को बढ़ावा देने के लिए **चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रथाओं, नवीकरणीय ऊर्जा पहलों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी** के महत्व पर प्रकाश डाला। हितधारकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को नवाचार के साथ एकीकृत करने से न केवल हरित विकास को बढ़ावा मिलेगा बल्कि लाखों किसानों का उत्थान भी होगा और उनकी समृद्धि सुनिश्चित होगी।

पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय ने अपने संबोधन में डेयरी क्षेत्र में टिकाऊ प्रथाओं की आवश्यकता और सर्कुलर अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को एकीकृत करने के सरकार के दृष्टिकोण पर जोर दिया। इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि भारत "विश्व की डेयरी" है, उन्होंने कहा कि डेयरी क्षेत्र कृषि जीवीए में 30 प्रतिशत का योगदान देता है। इन टिकाऊ प्रथाओं का समर्थन करने के लिए, एनडीडीबी ने 1,000 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ एक नई वित्तपोषण योजना शुरू की है, जिसका उद्देश्य छोटे बायोगैस, बड़े पैमाने के बायोगैस संयंत्रों और संपीड़ित बायोगैस (सीबीजी) परियोजनाओं के लिए ऋण सहायता के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करना है, जिससे अगले 10 वर्षों में विभिन्न खाद प्रबंधन मॉडलों को बढ़ाने में सुविधा होगी।

कार्यशाला के दौरान, डेयरी उद्योग में चक्रीयता पहल को बढ़ाने के लिए आवश्यक नीति ढांचे और वित्तीय तंत्रों के इर्द-गिर्द प्रमुख चर्चा हुई। डीएएचडी, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई), उर्वरक विभाग, नाबार्ड, ओएनजीसी, एनडीडीबी, मारुति सुजुकी, जीसीएमएमएफ (अमूल), बनासकांठा मिल्क यूनियन, अमूल, जीआईजेड और ईकेआई एनर्जी सर्विसेज के वरिष्ठ अधिकारियों ने बहुमूल्य अंतर्दृष्टि साझा की। **विचार-विमर्श के प्रमुख विषयों में सफल चक्रीय अर्थव्यवस्था मॉडल, छोटे डेयरी किसानों के लिए कार्बन केडिट के अवसर और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने में कार्बन ट्रेडिंग** की भूमिका शामिल थी। **भारत सरकार द्वारा**

समर्थित और एनडीडीबी के नेतृत्व में डेयरी क्षेत्र ने स्थिरता और चक्रीयता को बढ़ाने के लिए प्रमुख खाद प्रबंधन प्रथाओं की शुरुआत की है। तीन उल्लेखनीय मॉडलों में ज़कारियापुरा मॉडल, बनास मॉडल और वाराणसी मॉडल शामिल हैं, जो दूध के साथ-साथ गोबर की एक मूल्यवान वस्तु के रूप में क्षमता को उजागर करते हैं, जो एक अधिक टिकाऊ और चक्रीय डेयरी पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान देता है। सत्र का समापन वित्तीय रूप से व्यवहार्य और पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार डेयरी क्षेत्र को सुनिश्चित करने के लिए एक संरचित रोडमैप के आह्वान के साथ हुआ।

तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ ॥

साँच बराबरि तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है ताके हृदय आप॥

-संत कबीर

पशुपालन और डेयरी विभाग ने स्टार्टअप महाकुंभ 2025 में पशुधन और डेयरी नवाचारों का प्रदर्शन किया

प्रविष्टि तिथि: 05 अप्रैल 2025 शाम 5:10 बजे पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने हाल ही में 3 से 5 अप्रैल तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित स्टार्टअप महाकुंभ 2025 में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज कराई। डीएएचडी ने सिल्वर सपोर्टिंग पार्टनर के रूप में भाग लेते हुए पशुधन और डेयरी क्षेत्र में नवाचारों और पहलों को प्रदर्शित करते हुए एक आकर्षक मंडप स्थापित किया।

अपने मंडप के भाग के रूप में, **डीएएचडी ने पशुधन और डेयरी क्षेत्र में कार्यरत 15 स्टार्टअप को स्टार्टअप पॉड प्रदान किए।** इन स्टार्टअप को भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए अवसर तलाशते हुए प्रमुख हितधारकों के साथ अपने उत्पाद/सेवाओं और नेटवर्क को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। **इन स्टार्टअप्स ने अभिनव उत्पादों और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया उदाहरण के लिए- डेयरी प्रसंस्करण में तापमान निश्चित करना, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए एआई निगरानी, एस्ट्रस का पता लगाने के लिए सेंसर-आधारित स्मार्ट कॉलर, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दूध में मिलावट का पता लगाने वाली किट, डेयरी आपूर्ति श्रृंखला के लिए एंड-टू-एंड एसएएएस प्लेटफॉर्म, कृत्रिम गर्भाधान, उत्पाद ट्रेसबिलिटी में सुधार के लिए ब्लॉकचेन के माध्यम से डेयरी आपूर्ति श्रृंखला में डेटा एकीकरण आदि।** डीएएचडी की अपर सचिव सुश्री वर्षा जोशी ने मंडप का दौरा किया और कई स्टार्टअप के साथ बातचीत की। उन्होंने पशुधन प्रबंधन और डेयरी प्रौद्योगिकी में स्टार्टअप के योगदान और नवाचारों की सराहना की।

डीएएचडी के मंडप में राष्ट्रीय पशुधन मिशन उद्यमिता विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय गोकुल मिशन और पशुपालन अवसंरचना विकास निधि सहित प्रमुख सरकारी पहलों का प्रदर्शन किया गया। मंडप में किसानों तक सीधे सेवाएं पहुंचाने में डीएएचडी के प्रयासों को भी प्रदर्शित किया गया और शिक्षा जगत, उद्योग जगत और आम जनता से लेकर कई हितधारकों ने इनका अवलोकन किया और इनमें रूचि दिखाई।

डीएएचडी का 'एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य को बढ़ावा: योग दिवस 2025 पर परम्परा और स्थिरता को एथनोवेटरिनरी से मिलाकर सामूहिक वृक्षारोपण किया

प्रविष्टि तिथि: 21 जून 2025 9:43 अपराह्न पीआईबी दिल्ली द्वारा

योग को जीवनशैली के रूप में अपनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कल्पना के अनुरूप मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत **पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी)** ने गुजरात के चार प्रमुख स्थानोंः **द्वारका, सोमनाथ, हजीरा (वडोदरा) और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी** पर वैश्विक विषय **"एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग"** के अंतर्गत **एक साथ योग कार्यक्रम आयोजित** किए। डीएएचडी के अधीनस्थ कार्यालयों और देश भर में डेयरी सहकारी समितियों ने भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 बड़े उत्साह से मनाया, जो सम्पूर्ण स्वास्थ्य, स्थिरता और सामुदायिक भागीदारी के लिए साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

केन्द्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री **श्री राजीव रंजन सिंह** ने पटना की खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी में अधिकारियों और योग चिकित्सकों के साथ योग किया और नागरिकों को योग के अभ्यास के माध्यम से स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री **प्रो. एस.पी. सिंह बघेल** ने ऐतिहासिक आगरा किले में एक योग सत्र की अगुवाई की, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि योग केवल एक व्यायाम नहीं है, बल्कि भारत के सांस्कृतिक लोकाचार में निहित एक समग्र जीवन शैली है, जो शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करती है। उन्होंने योग को वैश्विक मंच पर लाने में प्रधानमंत्री की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला, जिसके कारण संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया, जिसे अब 177 से अधिक देश मनाते हैं। तिरुवनंतपुरम में, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री **श्री जॉर्ज कुरियन** ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में भाग लिया तथा योग के माध्यम से सम्पूर्ण स्वास्थ्य और सद्भाव के संदेश को बढ़ावा दिया।

वडोदरा में आयुष मंत्रालय, गुजरात सरकार, भारतीय योग संघ और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के सहयोग से डीएएचडी द्वारा आयोजित समारोह में **1,200 से अधिक प्रतिभागी** शामिल हुए। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल ने भाग लिया, जिन्होंने समग्र स्वास्थ्य और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देने में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। पशुपालन आयुक्त डॉ. अभिजीत मित्रा के साथ-साथ डीएएचडी और एनडीडीबी के वरिष्ठ अधिकारी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर एनडीडीबी की प्रदर्शनी में **एथनोवेटरिनरी पद्धतियों और आयुर्वेदिक पशुधन उत्पादों** को प्रदर्शित किया गया, जो पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित स्थायी पशु देखभाल को बढ़ावा देता है।

नई दिल्ली में कृषि भवन में योग सत्र आयोजित किया गया जिसमें डीएएचडी की सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय और मत्स्यपालन विभाग के सचिव श्री अभिलाक्ष लिखी के साथ मंत्रालय के अन्य अधिकारी भी शामिल हुए। सभी स्थानों पर एक सामान्य योग प्रोटोकॉल सत्र आयोजित किया गया, जिसके बाद प्रधानमंत्री के संबोधन का सीधा प्रसारण किया गया, जिसने देश भर के प्रतिभागियों को प्रेरित किया। डीएएचडी द्वारा समन्वित इन कार्यक्रमों ने वन हेल्थ दृष्टिकोण के अनुरूप मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को जोड़ने में योग की अभिन्न भूमिका पर प्रकाश डाला।

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर, देश भर में डेयरी सहकारी समितियों (डीसीएस) और दूध उत्पादक कंपनियों (एमपीसी) ने अत्यन्त उत्साह के साथ भाग लिया। लगभग 8,000 डीसीएस और लगभग 1.38 लाख किसानों ने राष्ट्रव्यापी योग संगम कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अलावा, 12,000 से अधिक पौधे लगाए गए, जिससे पर्यावरणीय स्थिरता के संदेश को बल मिला।

डीएएचडी द्वारा आईडीवाई 2025 के राष्ट्रव्यापी समारोहों की झलकियाँ













केंद्रीय राज्य मंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल ने "पशुधन उत्पादकता बढ़ाने हेतु आयोजित वर्चुअल जागरूकता कार्यक्रम" की अध्यक्षता की

किसानों से पशुधन की सुरक्षा के लिए बीमा, टीकाकरण और टोल-फ्री नंबर 1962 का उपयोग करने का आह्वान

प्रविष्टि तिथि: 20 अगस्त 2025 8:08 अपराह्न पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने **आज "पशुधन उत्पादकता बढ़ाने हेतु वर्चुअल जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में देशभर के 2000 कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) से 1 लाख से अधिक पशुपालक किसान जुड़े। इनमें छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, केरल, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, लक्षद्वीप, दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश शामिल रहे।** इस बैठक की अध्यक्षता नई दिल्ली से केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी एवं पंचायती राज राज्य मंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल ने की। इस अवसर पर विभाग की अतिरिक्त सचिव सुश्री वर्षा जोशी, श्री रमा शंकर सिन्हा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।





अपने संबोधन में प्रो. बघेल ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में पशुपालक किसानों के अमूल्य योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि पिछले 10 वर्षों के दौरान देश में दूध उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर 5.7% रही है, जबकि विश्व स्तर पर यह केवल 2% प्रतिवर्ष है। इस उपलब्धि का श्रेय उन्होंने देश के पशुपालक किसानों को दिया। उन्होंने विभागीय पहलों जैसे टीकाकरण कार्यक्रम और सेक्स-सॉर्टेड सीमेन (एसएसएस) के उपयोग की भी सराहना की, जिनसे देश में पशुधन उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिली है। केंद्रीय राज्य मंत्री ने किसानों से संवाद किया और पशु चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता के बारे में जानकारी ली, जिसमें इलाज संबंधी मदद के लिए टोल-फ्री नंबर 1962 का उपयोग शामिल है। उन्होंने पशु बीमा को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया और पशुओं के नियत समय पर टीकाकरण के महत्व को रेखांकित किया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों में पशुपालन के महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे नस्ल सुधार, जूनोटिक रोग नियंत्रण, जैव सुरक्षा, और विभागीय योजनाओं के माध्यम से उद्यमिता विकास पर जागरूकता फैलाना था। इसमें विभिन्न विषयों पर जागरूकता वीडियो और विशेषज्ञ सत्र प्रस्तुत किए गए, जिससे पशुधन उत्पादकता बढ़ाने के उपायों पर विस्तृत चर्चा हुई। यह सत्र ज्ञान आदान-प्रदान, नीति जागरूकता और उद्यमिता प्रेरणा का मंच भी बना, जिसने ग्रामीण विकास और आर्थिक वृद्धि में पशुपालकों की प्रमुख भूमिका को और मजबूती दी।

डीएएचडी ने देशभर में तीर्थयात्रा मार्गों पर कार्यरत पशुओं के कल्याण और प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश जारी किए

पशु कल्याण और तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए स्वास्थ्य प्रमाणन, परीक्षण और बीमा अनिवार्य किया गया

प्रविष्टि तिथि: 27 अगस्त 2025 शाम 5:24 बजे पीआईबी दिल्ली द्वारा

मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के तहत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने **"भारत में धार्मिक तीर्थयात्राओं के दौरान पशुओं के कल्याण और प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश"** जारी किए हैं। ये दिशानिर्देश अमरनाथ यात्रा, चार धाम यात्रा, वैष्णोदेवी यात्रा और मणिमहेश यात्रा आदि जैसी यात्राओं के दौरान तीर्थयात्रियों और सामान को ले जाने में लगे कामकाजी पशुओं (घोड़े, खच्चर और गधे) के पंजीकरण, स्वास्थ्य प्रमाणन, अनुकूलन और कल्याण प्रबंधन के लिए एक समान ढांचा प्रदान करते हैं।

प्रावधानों में सभी पशुओं का अनिवार्य पंजीकरण और टैगिंग, ग्लैंडर्स और इक्विन इन्फ्लूएंजा के लिए अनिवार्य परीक्षण के साथ स्वास्थ्य प्रमाणन, और उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में तैनाती से पहले न्यूनतम अनुकूलन अवधि शामिल है। तीर्थयात्रा मार्गों पर हर पाँच किलोमीटर पर पशु चिकित्सा चौकियाँ स्थापित की जाएँगी, जो पशु चिकित्सकों, अर्ध-पेशेवरों, दवाओं, IV द्रव और संगरोध सुविधाओं से सुसज्जित होंगी। **विश्राम शेड, पेयजल, वैज्ञानिक रूप से परिभाषित भार सीमा** और **रात्रि में आवागमन पर प्रतिबंध** के प्रावधान के माध्यम से अनुकूल कार्य स्थितियों पर जोर दिया गया है, जबकि जवाबदेही सुनिश्चित करने और पशु कल्याण की रक्षा के लिए **सभी कार्यरत पशुओं के लिए बीमा कवरेज अनिवार्य कर दिया गया है।** ICAR-NRCE के परामर्श से टीकाकरण कार्यक्रम और निगरानी उपाय रोग की रोकथाम और नियंत्रण को और मजबूत करेंगे।

इन दिशानिर्देशों में पशु कल्याण को प्राथमिकता दी गई है क्योंकि पशुओं का कल्याण उनके प्रदर्शन, तीर्थयात्रियों की सुरक्षा, जन स्वास्थ्य और उन पर निर्भर परिवारों की आजीविका को सीधे प्रभावित करता है। आराम, पानी, उपचार सुविधाओं, निर्धारित भार सीमा और कठोर उपकरणों पर प्रतिबंध सुनिश्चित करके, ये दिशानिर्देश पशुओं के ज़िम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देते हैं और साथ ही कल्याण और स्थायी आजीविका दोनों को बढ़ावा देते हैं। दिशानिर्देशों का उद्देश्य तीर्थयात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और स्थानीय प्रशासन तथा पशु चिकित्सा अधिकारियों को सहायता प्रदान करते हुए स्थायी तीर्थयात्रा प्रबंधन को बढ़ावा देना भी है।

राज्य सरकारों, तीर्थस्थल बोर्डों और पशु क्रूरता निवारण सोसायटी (एसपीसीए) के साथ समन्वय में, पशु कल्याण विभाग इन दिशानिर्देशों के कार्यान्वयन को सुगम बनाएगा और उनकी निगरानी करेगा ताकि सभी तीर्थस्थलों पर इनका प्रभावी रूप से पालन सुनिश्चित हो सके। ये दिशानिर्देश विषय विशेषज्ञों, हितधारकों, राज्य सरकारों, भारतीय पशु कल्याण बोर्ड (एडब्ल्यूबीआई) और आईसीएआर-राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र (एनआरसीई), हिसार की भागीदारी वाली एक परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किए गए हैं।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था

हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया

मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ

मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था

हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

-विनोद कुमार शुक्ल (हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था)



अमित शंकर

परामर्शदाता(रा.भा.)

समीक्षाधीन अवधि के दौरान राजभाषा अनुभाग की उपलब्धियां

विभागीय शब्दावली का सृजन : दिनांक 08.11.2023 को आयोजित संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति की दूसरी बैठक के दौरान यह निर्णय लिया गया था कि विभाग के तकनीकी शब्दों को शामिल करते हुए एक शब्दावली का निर्माण कराया जाए। उक्त निर्णय पर अनुवर्ती कार्रवाई करते हुए, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के सहयोग से विभाग की तकनीकी शब्दावली संबंधी बैठक आयोजित की गई जिसमें शब्दावली को अंतिम रूप दिया गया। शब्दावली का प्रकाशन कार्य पूरा कर लिया गया है।





फोटो: आयोग के सदस्य और विभाग के विषय विशेषज्ञ शब्दावली पर विचार-विमर्श करते हुए

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें: पशुपालन और डेयरी विभाग के विभिन्न अनुभागों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन तथा प्रगामी प्रयोग की समीक्षा के लिए प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता संयुक्त सचिव एवं राजभाषा प्रभारी द्वारा की गई। समीक्षाधीन अवधि के दौरान दिनांक 24.06.2025 और दिनांक 11.09.2025 को बैठकों का आयोजन किया गया। संयुक्त सचिव एवं राजभाषा प्रभारी ने सभी अनुभागों को निदेश दिया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें तथा राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने का हरसंभव प्रयास करें।





फोटो: समिति की बैठक के दौरान विचार-विमर्श करते हुए सदस्यगण

कार्यशालाओं का आयोजन: वर्ष भर के दौरान प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन किया गया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई जिसमें से पहली कार्यशाला 22 अप्रैल 2025 को, दूसरी कार्यशाला 25 जून 2025 को तथा तीसरी कार्यशाला 30 सितंबर 2025 को हुई। इन कार्यशालाओं में राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ तिमाही प्रगति रिपोर्ट के नए प्रारूप को भरने के संबंध में मार्गदर्शन भी किया गया।





फोटो: कार्यशाला के दौरान वक्ताओं द्वारा प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया गया

हिंदी पखवाड़ा-2025: राजभाषा विभाग द्वारा जारी अनुदेशों का पालन करते हुए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी विभाग में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस वर्ष का पखवाड़ा पिछले वर्षों की तुलना में नवीनता लिए हुए था। इस दौरान निम्नलिखित क्रियाकलाप किए गए।

माननीय मंत्री महोदयों का संदेश: हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय मंत्री जी और राज्य मंत्री जी का संयुक्त संदेश जारी किया गया जिसमें उन्होंने अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिंदी के महत्व और इसे अपनाने पर जोर दिया। साथ ही, सरकारी काम-काज में अधिक से अधिक हिंदी में काम करने पर बल दिया।

हिंदी दिवस पर पखवाड़े का उद्घाटन: इस विभाग के इतिहास में पहली बार हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी पखवाड़े का एक भव्य आयोजन कॉस्टीट्यूशन क्लब में किया गया। इस समारोह में विभाग के सचिव श्री नरेश पाल गंगवार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा विभाग के सभी अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय सचिव महोदय व उपस्थित अन्य अधिकारीगणों द्वारा दीप प्रज्जवलित कर समारोह का शुभारंभ किया गया। समारोह में गीत-संगीत का कार्यक्रम और नाट्य मंचन का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया।





फोटो: सचिव महोदय दीप प्रज्जवलित करते हुए। कलाकारों द्वारा संगीत का सुमधुर कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

प्रतियोगिताओं का आयोजन: विभाग में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताएं सदैव आकर्षण का केंद्र रही हैं। इस वर्ष सभी कार्मिकों में इन प्रतियोगिताओं के प्रति विशेष उत्साह देखा गया। पखवाड़े के दौरान कुल 6 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें निबंध, श्रुतलेखन, राजभाषा ज्ञान, वाद विवाद व काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन मुख्यालय स्तर पर किया गया और अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भारत में स्थित अधीनस्थ कार्यालयों के लिए किया गया।





फोटो: प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया

काव्य संगोष्ठी का आयोजन: इस वर्ष हिंदी पखवाड़े के आयोजन में कई नवीन पहलें हुई हैं, उसी कड़ी में काव्य संगोष्ठी का अयोजन भी एक है। काव्य संगोष्ठी में श्री चरणजीत सिंह चरण, श्री विनीत कुमार, श्री मनवीर मधुर, श्री रविन्द्र शर्मा, श्री आशीष कुमार सिंघल व सुश्री निवेदिता बांदिल जैसे चुनिंदा प्रतिष्ठित कवियों ने भाग लिया। काव्य संगोष्ठी की अध्यक्षता एएस और एफए श्री संजीव नारायण माथुर द्वारा की गई। इसमें हास्य, देशभक्ति, वीर,श्रृंगार रस आदि का समावेश था। डॉ. निवेविता बांदिल ने पुणे से ऑनलाइन जुड़ कर काव्य पाठ किया। काव्य पाठ का यह कार्यक्रम लगभग 3 घंटे तक चला। इसमें देशभर में स्थित 33 अधीनस्थ कार्यालयों को भी वर्चुअल माध्यम द्वारा 'ऑनलाइन' जोड़ा गया।





फोटो: काव्य संगोष्ठी में कवि तथा श्रोतागण

पुरस्कार वितरण समारोह: गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी माननीय राज्य मंत्री महोदय द्वारा 16 अक्टूबर, 2025 को विजयी प्रतिभागियों तथा भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय मंत्री जी के साथ अपर सचिव महोदया सुश्री वर्षा जोशी व अन्य उच्च अधिकारियों ने मौजूद रह कर न केवल कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई अपितु पुरस्कार विजेताओं की हौसला अफजाई भी की।





हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **60%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**

9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
	14.राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक), वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	

15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**45%**	35**%**	25**%**

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।



सत्यमेव जयते



संदेश

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान की सजीव अभिव्यक्ति है। हिंदी देश को एक सूत्र में बांधती है और हमारी भावनाओं को सरलता, आत्मीयता और प्रभावशीलता से अभिव्यक्त करती है।

14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस वर्ष भी मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय में 14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। हिंदी दिवस मात्र औपचारिकता नहीं वरन् हिंदी के प्रचार–प्रसार और उसके सम्मान को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाने का एक सुअवसर है।

हिंदी और इसकी बोलियां संपूर्ण भारत में बोली जाती हैं और आज यह विश्व की भाषा बनती जा रही है। फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात में भी हिंदी या इसकी मान्य बोलियों का उपयोग करने वाले लोगों की बड़ी संख्या मौजूद है। फरवरी 2019 में अबू धाबी में हिंदी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली। यह हमारे लिए अत्यंत गर्व का विषय है।

हिंदी भाषा भारत की विभिन्न भाषाओं को साथ लेकर चलती है और इसमें उन सभी भाषाओं के तत्व निहित हैं। हमारे माननीय गृहमंत्री जी ने भी भारत मंडपम में आयोजित राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में इसी बात पर बल देते हुए कहा कि **"हिंदी भाषा भारत की सभी भाषाओं की सखी है।"**

देश के आत्मसम्मान को जागृत करने के लिए भारतीय भाषाओं का उपयोग अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए राजभाषा हिंदी सभी भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हमारे आत्मगौरव के उत्थान को अंतिम लक्ष्य तक ले जा सकती है। मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी एक ऐसा क्षेत्र है जो सीधा किसानों, पशुपालकों तथा मछुआरों से जुड़ा हुआ है। मंत्रालय द्वारा चलाई गई योजनाएं अंग्रेजी और हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी जन–जन तक पहुंचाई जाती हैं जो हिंदी भाषा के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं के विकास हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है।

आइए हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सब सत्यनिष्ठा से यह प्रतिज्ञा लें कि हम पूर्ण प्रतिबद्धता से अधिकाधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करेंगे। हमें पूरा विश्वास है कि अपने छोटे–छोटे दैनिक प्रयासों से हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं।

हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री विनोद कुमार शुक्ल जी ने भाषा पर क्या खूब कहा है कि

अपनी भाषा में शपथ लेता हूँ
कि मैं किसी भी भाषा का
अपमान नहीं करूंगा
और मेरी मातृ भाषा
हर जन्म में बदलती रहे
इसके लिए मैं बार–बार
जन्म लेता रहूँ–

अंत में एक बार पुनः हिंदी दिवस 2025 की अशेष शुभकामनाएं।

राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री
भारत सरकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

प्रो. एस.पी. सिंह बघेल
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री
भारत सरकार

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर



सत्यमेव जयते

भारत सरकार

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय

पशुपालन और डेयरी विभाग

राजभाषा अनुभाग